

प्रश्नायन ।

२५

हि ३३५७-विज्ञा गौरीज के लान भाग परज प्रकाशित हो
 कुह है गौरी भागकाय के सामने है । इसमें भक्ति व्यापहारिक
 गौरीज और गौरीजानिक विषयों का विज्ञा हो गई
 है । गौरीज भक्ति विषयों पर व्यापार व्यापार प्रकाशित गया है । इस
 भाग पर बाजार भाग यह है कि हमारा गौरीज व्यापार व्यापार
 विज्ञा हो रहा है । अब तक उसका सुधार न किया जा सका
 तब तक सामुदायिक उत्पत्ति होने का सम्भव है और बाजारों के
 भाग का भाग दृश्य-क्षेत्र में भाग का बाजार भाग ही गौरीज
 व्यापार का सुधार का एक मात्र उपाय है । क्योंकि बाजारों का भाग
 सामाजिक व्यापार का भाग है । हमारा बाजार यह है कि विज्ञा
 हो उद्योग उद्योग गौरीज सुधार है पर गौरीजानिक सुधार भाग ।
 बाजार यह है कि बाजारों का सुधार है अब बाजारों का परज में ही भाग
 गौरीजानिक व्यापार हो और व्यापार भाग उसका प्रति प्रतिगम
 हो रहा है ।

दुम्में बाजारों के दृश्य में भाग का प्रति प्रतिगम परावरने
 के बिना सम्भव नहीं है । यह एक गौरीजानिक है । हम इस सम्भव
 करने का सुधार का सुधार सम्भव है कि दुम्में किसी भी विषय
 पर ज्ञान का सुधार करने का साधन है । विज्ञान विज्ञान का सुधार
 है । विज्ञान विज्ञान का सुधार नौवाँ वर्ष ही कथार है अतः
 विज्ञान का सुधार है जिस पर बाजारों पर उद्योग तब
 विज्ञान का सुधार नौवाँ वर्ष पर व्यापार करे । जमा हुआ नौवाँ वर्ष
 विज्ञान व्यापारिक और नातिविज्ञान हो ।

विषयानुक्रम ।

| पृष्ठ विवर | पृष्ठ |
|-----------------------------------|-------|
| १ महा भगवत् | १ |
| २ विवर | ४ |
| ३ महा विवर का महा | ५ |
| ४ अतिविशेष | ७ |
| ५ भूत का भूत धान भगवत् न करता | १० |
| ६ भूतभूमि | ११ |
| ७ व्याख्यात्मक (१) | १ |
| ८ व्याख्यात्मक | १३ |
| ९ व्याख्यात्मक | २० |
| १० व्याख्यात्मक | २३ |
| ११ व्याख्यात्मक (वाक्य) | २ |
| १२ भगवान् महाशक्ति (१) | २५ |
| १३ महा न अन्तर्गत काम विष्णु म, | ३३ |
| १४ व्याख्यात्मक (२) | ३५ |
| १५ अतिविशेष | ३७ |
| १६ व्याख्यात्मक (१) | ३९ |
| १७ विष्णु मनुष्य | ४९ |
| १८ भगवान् महाशक्ति (२) | ४ |
| १९ व्याख्यात्मक (३) | ५० |
| २० व्याख्यात्मक (१) | ५३ |
| २१ अन्तर्गत भूत व्याख्यात्मक करता | ५ |
| २२ व्याख्यात्मक (२) | ५८ |
| २३ व्याख्यात्मक | ६ |
| २४ भगवान् महाशक्ति (३) | ६३ |

पञ्चभाग ।

| | |
|----------------------------|----|
| कुसुमसुन्दरी का वार (विषय) | ११ |
| २१ प्राध्यापिका | १३ |
| २२ नीति मंत्र | १५ |
| २४ गायिका | १७ |
| २५ प्रतीकवादी | १९ |
| ३० गायिका का स्तुति | २१ |
| ३१ गायिका की वृत्ति | २३ |





हिन्दी-बाल-शिक्षा

चौथा भाग



पन्ना षाठ



मंगी मन्त्रालय

(१)

शिक्षण शास्त्र ठीक कामाधिक, ज्ञान सब जग आन दिया,
सब ओंका का मासमाग का निगूह हा उपदेश दिया ।
पुद् पार पित हरि हर दहा या उमका म्यार्थान कहो,
मफिन-भाप मेप्रेस्ति हा यद् चित्त उमो म क्षीन रहा ॥

(२)

पियया का आशा नहिं जिनफ, सायभाष धन रखत है,
निज-पर क हिन-साधन मचा, निग दिग तपर रहत है ।
म्याध-पान की बटिग तपस्या, बिना लद् जा करते है,
पस झानी साधु जगत क दुख समूह का हरने है ॥

(८)

होकर सुख में मग्न न कूनें दुख में कभी न घपराये;
पूरे नदी समझान भयानक झटकी में नहीं भय खाये ।
रहें अज्ञान अन्ध निरंतर, यह मन रहतर हट जाये,
एक-विशेष अनिष्ट-भाग में सहनशीलता दिखलाये ॥

(९)

मुसी रहें सर जीव जगन के काई कभी न घपराये;
पैर पाप अभिमन छूट जग निय नय मग्न गये ।
घर घर चर्चा रह धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जाये;
हान खलि श्रम कर अना मनुष्य—बन-पल सब पाये ॥

(१०)

इति भाति व्याप नहीं जग में कृति समय पर हुआ करे,
धर्म-निष्ठ हाकर राजा भू न्याय प्रथा का किया करे ।
रोग मरी दुर्मिस्त न फैल, प्रजा नाति न दिया करे,
परम अहिंसा--धर्म जगन में फैल सर्वहिन दिया करे ॥

(११)

फैल धर्म परस्पर जग में मोह दूर सब गेट हटें,
अप्रिय कृत्य कगेर नाद नहीं काई मुक्त से दल हटें
धन कर सब युग-भर इत्य स दे-दृष्टि नगर हटें,
पशु-स्वल्प विचार सुशा से सब मन अट-मन हटें ॥

कारते दर दिन अपनी हाथों, परन्तु खोर हाथ न आया।
आसिर सातवीं रात्रि में बड़ा सायबानी से अमरकुमार ने खोर
पकड़ लिया। उसने हाथ डालकर आसिर खोरबार भी कर
लिया। बाद में अमर उस राजा के पास आया। राजा ने आदि
में अमर को सब हाथ सुन शूना का दरद दिया। अमरकुमार ने
कहा— 'महापति इस शूना इन से परम कामा विचार
संगत सभी आदि। कभीदि मति में कहा है कि—

उत्तम विद्या संग्रहे यदपि भेष प हाथ।

एतौ आसिर खोर में, बचन तउ न बाध है॥

अमरकुमार का राज भेष का उच्च स्तर। दर दिन सब
पर बंग २ आसिर का भेष देकर विद्या संग्रह लगा।
आसिर आदि आदि राजा ने हाता कद अमर विद्या पर बने
वह समझा सब भेष सब समझा। सब राजा मरदुकर
कहा— 'ए आसिर' मुझ विद्या विद्या में भी हूँ बन्द कर
है' राजा को इस आसिर कर राजा का निरन्तर करते दस
अमरकुमार ने कहा— 'महापति' विद्या के भिक्षा विद्या नहीं
आने। यदि आसिर विद्या संग्रह है न तो विद्या सब देता
है और बाद में दे देता, सब ही विद्या आया। जैसे
एक ऊपर से भेष का रहता है जैसे विद्या में सब ही आ
है जो हुर का उच्च और बाद का भेष समझा है।
एतौदे आसिर विद्या संग्रह है विद्या संग्रह में है। एतौ
का बंग सुन्दर भेष में आने विद्या के आसिर
विद्या संग्रह है आसिर संग्रह है। एतौ बंग है एतौ विद्या
संग्रह का संग्रह है आसिर। एतौ का बंग अमरकुमार ने
विद्या संग्रह है एतौ का बंग है एतौ संग्रह है।

मात्र-भय है। पुत्र पर माता पिता का सब से अधिक उपकार है—इतना अधिक कि पुत्र उसमें क्या उन्नत नहीं हो सकता। जिन्होंने हमें जन्म दिया है उनके उपकार का बदला चुकाने का विचार ही कैसे किया जा सकता है। इसीलिए समझदार लोग माता पिता का दयाता तुल्य समझकर उनकी सेवा करते हैं उनकी आज्ञा मानते हैं। चाहे कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े पर पुत्र माता-पिता की भक्ति अपनाय करन है। इस भक्ति में माय चार बातों का समावेश होता है। (१) सम्मान (२) प्रेम (३) सेवा और (४) आज्ञाशालन।

(१) सम्मान—मन से माता-पिता के लिये सम्मान होना चाहिए अर्थात् उनके चारों ओर में कभी कोई अनुचित विचार न करना और उनके शरीर का मन में स्थान न देना चाहिए। महा ध्यान रखना चाहिए कि दह हर समय और हर हाजन में हम से बड़ हा है। माता पिता के साथ बातचीत करत समय बड़ भी शब्द मुखता का इस्तेमाल काया करना मान मरा न निजलने पावे। उनके सम्मान से जो कुछ कहा जाय वह दिया, म न कहा जाय किन्तु सदा और बिना सम्माना पिता अब पास हा बड़ हा त सेना उठना आदि विचारों में बिनाय के साथ करना चाहिए। जम — अब व हमारे सम्मान से बड़ हा ता हम बड़ न गे पड़े रहने म उनके प्रति आदर के भाव नहीं जाहिर होत ।

(२) प्रेम—चाहे हृदय में प्रेम न हा ता सकार सुवा और कार्य है। माता पिता दुःखा के निवे अपक परिश्रम करने है किन्तु पुत्र यदि प्रेम न उठाही मदा करे तो उन्हें बड़ परिश्रम नहीं मान्य है। अब कमा य विनिमि म दह हा दहम का का उदाहरण हा मर मा पुत्र का प्रेम मरकर उनकी आत्मा का रती मक्ति और हृदय निवना है।

को उत्तम बनाना चाहिए। जो मौ-बाप का दयाता समान समझ कर उनकी सेवा करते हैं उनका जीवन पूर्व सुखमय व्यतीत होता है।

पाठ ४

अतिथिसत्कार

राजक' भारतभर का जनक विचारताआ में से अतिथिसत्कार को प्रवृत्ति ना मुह" है। अतिथिसत्कार भारतीय सभ्यता का प्राग है। शर्चान कात में अतिथियों का सत्कार करने का सिधे लोग लगायित रहत थ। य सत्कार का अरमर पाने ही अपने को धन्य मानते थ। यास्तय म अतिथिसत्कार करना मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है। इसमें प्रेम सेवा सहानुभूति और कर्त्तव्यपालन का सम्म्य कूट कृत्तर भरा है। बिना प्रेम अतिथिया का सत्कार नहीं होता। इमटिअ अतिथिसत्कार करने वाले में प्रेम हाता हो है या हाता हा चाहिए।

यदि कोई निम्सदाय दगलि नूला भटका सक्नों का मारा तुहार घर आ पशुवे न' उसका स्वागत करा। माड धवनवालो। बैठन को स्थान दा। अगता हैसियत क अनुमार उसकी आपश्क साओं का पूरा करदी, सभ्यता म दर्नाय करा। प्रेमभाव दिख जाया। अहा! यह कितना प्रसन्न हागा' उस अगार अगत् हागा और तुहे सद्य हृदय से आगाय दगा। यह! हमके प्रति तुम्हारी सेवा है। दस्ता अतिथिसत्कार और सेवा में कितना अधिक् सम्म्य है' इसा तरह सहानुभूति और कर्त्तव्यपालन शुध ना अतिथिसेवक में हागे चाहिए।

की गुप्त बात प्रकट करना कल्पन कल्पना पर आधारित है। जिसमें यह बुरी सन हो, उसे बड़ा मगानक समझना चाहिए। बहुत लोग कथित मनामन के लिये ऐसा करते हैं। उनका मनोरजन कभी २ आपत्तियों का पहाड़ ढाड़ना है। पस मयूर मनोरजन को रीतावी लीला कहना अधिक उचित है। इस दुर्गुण से कभी २ जान जाने तक कानौपन आपत्तता है। एक कथा है कि-

किसी समय पृथिवीपुर नामक नगर में सुन्दर नाम का राजा था। एक बार यह राजा दशनिष्ठित (रत्नटी गिता पाये हुए) घड़े पर मगार हुआ। यह घाटा उसे जगल में लगया। जगल तक दौड़ते २ एक जान में यह टहर गया। इसी समय राजा सुन्दर उनका झोर धकाधट का मारा किसी घृण के भाव सो गया। उसी समय एक हाटा सा सने गया के मुन में प्रवण कर गया। राजा लौटकर घर आया पा-पु पेट की पीड़ा के मारे बेचैन होगया। उसने बहुत दनकिट पर एक भी कारण न हुआ। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि प्रत्यक्ष करनेके लिये गंगाजी जाना चाहिए। यह विचार कर यह रानी का साथ लेकर चला। मार्ग में राजा किसी जगह एक बड़ के नीचे सो गया। उस समय रानी जाग रही थी। दास हा एक बाँधी में कोई सप रटना था। अन्त में यह सप १० राजा के पेट में पुता हुआ था कुछ बाहर निकला। उस समय बापी में रहा हुआ साथ उसस वाला रट्टेराज के पेट में बाहर निकला क्या सुनहा जामला कि मे तर दिगा का हलाउ जानता ह। यदि बाह पुरव कइयो कइया की उठ काया में बाटकर पापाय ता कनापास हा तरा सामा राजाय। यह घमकी सुनकर उसे भी थप आया। उसने उपद्रव कर कहा—मैं भी तर माउ का उपाय भलीभोति

१० सन् १५८ की बात है। एक बार दुर्गमान देव क लिसपन मगर में एक जहाज लाया आया था। उस जहाज में लगभग बारह सौ मनुष्य थे। रात में मल्लाहों का जहाज गहरी रात में एक घटीन से टकरा गया। जहाज की पेंढा में उद्दहा जाने से उसमें पानी भर आया। वह देव देख बचिषा का मानो पाट मार गया। उद्दहान निन्दनी की आत्मा म्याग हो। कस्तान उद्दहान का पचना इसभय जान एक दुर्गा निराज और पेटासा खाने पान का सामान साथ में लेकर खाना हुआ। तब न चाहा कि हम डोंगी पर चढ़ कर अपने जहाज में चले जायें। पर चढ़े हुए लोगों ने नगी नगरों से उनका सादना किया और किसी का न जाने दिया। क्योंकि यदि वह जहाज में से नारी हाथानी तो हुए जाने का मारा था। इस प्रकार कस्तान उनसे अदमिग का डोंगी में देकर चला। अब शक्ति आता है तब अकली नहीं आता। इसा निदन क अनुसर यही भा आगति पर अर्पित जाने लगी। कस्तान शमार हाथों और नीय हो मर गया। उसके मरते हो 'तू तू मैं मैं' हाने लगा। अर्धक अपन को सब का सरदार मानने लगा। यह दुर्गा देख दुर्गा समझदारों ने एक बड़े अदनी को बजाना सुना।

कुछ दिन बाने। विचार का कहीं पना न चला और खाने पाने का सामान समाप्त होने आया। कस्तान ने कहा-भाजन अधिक से अधिक तान दिन चल सकना है। इतनी सामग्री से हम सब का निर्गह होना कठिन है। इसलिए सब क नाम की चिट्ठियां टालो जाय और अर्धक चौथा चिट्ठी में जिसका नाम निरज उसे हनु में पेंक दिया जाय। इस बात का सब ने स्वीकार किया। सब क नामकी चिट्ठियां उड़ी गई परंतु कस्तान एक बंदरी और एक बंदरी क नाम की चिट्ठियां नहीं

ने उसका पदार्थ किया। इस समय कदापि अपने दुष्टियों पर पड़ना रहा था। इनने में हो उमे पर जैन मुनि दृष्टि गावर हुए। उनका पास आकर उसने किया हुए पापों से दुष्टकारा पाने का उपाय पूछा। मुनि बोल—‘एक दुष्ट पर यदि सौ पर तक एक पैर से सदा हावर तास्या कर और दूसरा करन एक सामाधिक कर ता ने यह पदार्थ मण्य दूसरा का दरासरी नहीं कर सकना। हे काल! तू सब जान कि सामाधिक की महिमा अत्यन्त है’। मुनिरात्र के पचनारुन मुन केदारी ने तुरन्त सामाधिक ल ला। यह दिखाने लगा—‘अह! मे न कुसगाति में दृष्टर व्यर्थ हो पाय कर्म दिये। मुझे धिक्कार है’। इस तरह हम भयान में आकर हावर करनान ज्ञात किया।

राजा, केदरी का समता और सन्म की मूर्ति देखकर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ। राजा को चकित हुआ देख मुनिरात्र बोल—‘नरापात्र! आप विस्मित क्यों हात है। सामाधिक का महान्व हो ऐसा है कि ज्ञाता और ज्ञातागी भी इससे ज्ञाता बत्वाय कर सकना है।

मुनिरात्र द्वारा की हुई सामाधिक की प्रशंसा से अत्यन्त प्रसन्न राजा ने प्रतिदिन सामाधिक करने की प्रवृत्ति ली। केदरी ने जैन ज्ञान को साधक पर दिखाया। उसने ज्ञान-परायण ने सामाधिक के द्वारा संपूर्ण कर्मों का उन्मूलन कर अत्यन्त सुखमय मुक्ति की प्राप्ति किया। सर्वत्र ज्ञान-विद्वत् महिमा फैल गई।

जो इसमें दया राज्य की अविच्छिन्नता हुई। दया अथवा दानो होनी। यह दान राज्य करने के लिये हुई। यह दान राज्यमान में शी-तसम्राट् नानक महर्षि के पास था। उसका सामने दया ने राग मरी एहि में देना। मन्त्री ने दया का अन्वयनी विचार समझ लिया। यह बड़ा ही नीजमान् था। उसने साचा-कार्य किया ही बचे पर राजन की कोठरी में जिना दान जग नहीं बच सकता। इसलिये मुझे करने प्रयत्न का रक्षा करने के लिये यह स्थान छोड़ देना चाहिए। यह विचारकर शीतसम्राट् अपना आश्रय का लान मारकर वहाँ से चले दिया। सब है सदाही पुरुष करने सदा-कार के निवेदन नहीं दूँ देते। अध्यात्मे सब कुछ त्यागकर भी सदा की रक्षा करने है।

शीतसम्राट् दया का राज्य छोड़ अन्यत्र जा विचार सार राजा का नौकरी करने लगा। वहाँ रहने के अब कुछ दिन होत गये, तब विचारसार ने उससे कहा—“शीतसम्राट् ! वहाँ तुम जिस राजा के यहाँ काम करते थे, उसका क्या नाम है ?” शीतसम्राट् ने उत्तर दिया— ‘नानक ! मैंने जिस राजा का वहाँ सेवा का थी उसका नाम भोजन करने में पहले बना योग्य नहीं है। नाम देने से दिन भर अन्न से भेट नहीं होता’। यह कहकर शीतसम्राट् ने दया का सिक्का दिखाया दिया। राजा शीतमान् शीतसम्राट् का दान सुन बड़ा विस्मय हुआ। उसने मन्त्री के कथन की ओर करने के कारण से राज खना ही में अन्न का सामान मंगा और हाथ में कौर लेकर बोला—“अब उस राजा का नाम लो”। मन्त्री ने ज्यों ही “दया राजा” कहा त्यों ही दूत ने आकर खबर दी कि “अपने नगर का दया राजा ने घेर लिया है”। दूत की बात सुन राजा

विवाहमार न तुल्य हो और चाला मयस्क दिया और समान ले
 लिये मेना सजाकर प्रस्थान दिया। दिन भर गुरु घमासान युद्ध हुए
 शीलसत्राह युद्ध का न १ करने गया। शत्रु के याज्ञाचार्य न उसका
 सामना किया। परन्तु पुण्यवामा नहा जान है दशों उनका महि
 हाता है। गामनदेवी न समस्त प्रतिपक्षियों का र अभिन कर दिया।
 उसी समय आकाशवाणी हुई कि नमोऽनु शीलसत्राहाय प्रह्व
 धैरजाय । अथात् अथर्वम ग्रामकन शीलसत्राह का नमस्कार
 हा। यणा कहकर देवताओं न पूजा का वषा की। शीलसत्रा
 चरित हो, उवा हा विचार करने लगा त्या ही उस अग्रविज्ञान
 हागया। अतः तब उगा सामन जा एक प्रकार का परदा प
 वद दूर हा गया। उनके सामने दिव्य प्रकाश प्रकाशित होने लग
 बात उगन भी गमय करताय किवा और मुनिश्री
 ध्याना कर लो। अतः म मुनिराज शीलसत्राह प्रह्वयय के
 माय मे मुनि का मान हुए।

ध्यार वाजरा। अथर्व की अमिन महिमा है। हम ल
 और वाजराह दाना का मुख पूज बनान के लिए अथर्वम न
 जिस अथर्व दूमा उभाव नगी है। अथर्वम न गरीबन च
 मनावत की प्राप्ति जाता है। ना मगुरुन मन म भा प्रह्व
 कर्तन है उहे आभयन मान हाता है। अथर्वारा क सामन स
 अर्द्ध विदिया और द्युताजग हाय बांधे लक्ष रहने
 अतमव्यय का मता। कही ना यनवार समाम निम
 म मय न हा हाती क तात उदन जगन है और क
 मे मयव्य प्रमग ये द्या का पुनर्पुत्रि कता। यह स
 अथर्व का मता है। मय है— अथर्वम सव सि
 है। अथर्वम ही अत हाताती है।

पाठ १०

सामायिक

पण्डितजी — तुमतिनाल आज पाठशाला में देर से क्या
सच बनाया, रास्ते में चलने लगें ?

तुमति०—जो नहीं घर से सीधा यहीं आ रहा हूँ। आज अष्टमी
न काज का सामायिक का यों इसी में इतना अदेर हागई है।

पण्डितजी—बहुत टाक। अच्छा यह बनाओ सामायिक क्या
सायिक किस कहते हैं ?

०—एक जगह प्राप्तन विद्यावर बैठ जाय मुखयलिका ल

बालना, यदि कारगुज चलना का काम पड़े तो घरता देख-

ल घर चलना, सामायिक कहलाना है। इस दशा में भय
(मन) नर रहना पड़ता है। इस

पण्डितजी—तुमतिनाल तुम प्रतिनि सामायिक बन्द बाता
पद तो बड़ा अच्छा जान है। किन्तु सामायिक बन्नात मय
समयका करा हा खाने में सुगम हो जाय। असन २ ता
पद है कि प्राप्तन जमाने देखे स हा सामायिक नहीं कह
लाना।

तुमति०—महाराज ! आज हा सामायिक का स्वका
बनाने का अनुग्रह काजिये। सामायिक बिते कहा है ?

पण्डितजी न मय छात्रों का आर लक्ष्य करके कहा—“पिया
पिया। दाना समय सामायिक करना ईनिक बस्य है। यह
गारो में प्राणरुक बस्य इतनाया गया है। आम्दक बस्य
का रोज २ प्राण्य करना चाहिये। किन्तु अब तब उसके सचे
शक्य का विदित न कर लिया जाय, तब तब उठना चाहिये

पाठ १०

सामायिक

पण्डितजी — 'सुमतिनाल' आन पाठशाला म दर से क्यों ये' सच बनाआ राखने में चलने लगे थे?

सुमति०—जो नहीं दर से साधा यही आरहा हूँ। आन अहमी गान ज्ञान का सामायिक की थीं इसी म इतनी अवेर हागई है।

पण्डितजी—यह ठीक। अच्छा यह बनाआ सामायिक क्या सामायिक किसे कहते हैं?

०—एक जगह आसा बिहावर बैठ जात मुखविशाल बालन, यदि कारगजायन का काम पढ़ता घरता देख ल कर चलना सामायिक कहलाना है। इस दंग में भय निवृत्त तक रहना पड़ता है। इस

पण्डितजी—'सुमतिनाल' सुमप्रतिदिन सागायित यह बाता यह ता दहा अच्छा मान है। किन्तु सामायिक क्यात मय समझकर करा ता तान में सुगव हा जाय। असल में ता यह है कि आसन उमागर येने से हा सामायिक नहीं कह जाना।

सुमति०—मदालय 'आन हा सामायिक का स्वकय बनाने का अनुग्रह दाखिल। सामायिक किसे कहते हैं?

पण्डितजी—तुम छात्रों की आर जल्प करके कहा—'विद्या धिया। होना समर सामायिक करना दैनिक वस्तु है। यह आर्यों में आर्यवर्ष वस्तु दत्तताया गया है। आर्यवर्ष वस्तु का राज २ अर्यवर्ष करना चाहिए। किन्तु अब तक उसके सचे स्वकय का विदित न कर दिया जाय, तब तब उजना आर्यवर्ष

की ओर उन्मुख होना आवश्यक है। और हम मात्र ही सामायिक है। इसका यह अर्थ हुआ कि मन का ध्यान किये बिना किसी सामायिक नहीं हासिल की। मन मन के हम दावों में बचकर मन का पुष्टि-पूर्वक सामायिक करना चाहिए।

सामायिक में मन पुष्टि की ऐसी आवश्यकता है वैसी बचन-पुष्टि की भी। मौन धारण करना आवश्यक है। यदि वह न हासिल ता हिनायत फिर कामज और अन्य ध्यान ही बालना चाहिए। सामायिक बाधों में आदत उपद्रव न करना चाहिए। असत्य सत्यासत्य—मिथ, कथमुक्त ध्यान भी न बालना चाहिए। बचन के हम दावों का परिहार करना आवश्यक है।

सामायिक में अगर पुष्टि करना भी आवश्यक है। क्योंकि वाक्यान्तर से अन्तर का पुष्टि का स्वरूप रहता है। दूसरे शब्द यह ध्यान है। ऐसा समझ सकते हैं। अगर का पुष्टि के साथ वस्तु उपद्रव और ध्यान का पुष्टि का निश्चय साधक है। इसलिए ये सब पुष्टि होना चाहिए। गृहस्था का अन्तर का पुष्टि बाध पुष्टि पर निर्भर है। यह बात जल्द में रखकर गाम्भीर्य सब ध्यान आवश्यक में जाना चाहिए।

पाठ ११

देशाटन (गाथा)

भक्तिवाक्यों में देशाटन का एक महत्व है। मनुष्य देशाटन करने में बहुत लाल होना है। जब हम देशाटन करें तो किसी देश का स्वार्थ मन हो मुक्त हो पर उसमें होने वाले सब लाभों का ध्यान भी ध्यान रखना चाहिए। निम्न २ देशों में

आतिम भा है । अन्तर्गत रहना के ध्यान में बुद्ध - ध्यान
द्वारा कम हुआ है । वस्तु सम्मारे हाता था और ध्यान बहुत
होना है मुमासिना में जा हासिया हाता है उनका मुख्य आधार
न न बाता पर है । (१) लाभ (२) प्रत्यक्ष का निधिजता (३)
अन्तर्धाना ।

(१) लाभ-बहुतर दून बाते मारकर लाभ का धाना दकर
न न मान है । बाई - धानर या लाह का धाना पर सान का
गम बढ़ा का और यह प्रकट करके कि यह साना हमें वहीं पना
मिना है कम मार में न लगन है । मुमासिना लाभ के जानमें
वसकर उस गुणा में खगान और फिर हाथ मान रह जा
है । बाई २ धान अन्तर्धाना भव मन अन्तर्धाना का सा बना लन
है । ३ अन्तर्धाना यदि या दून और बढ़ा लड़ा स सन्नकर
पर प्रकट करत है कि उनका मज अन्तर्धाना बाता धना गया
है । इसलिये टिकन लगन के लिए धन का सहायना मांगन
है । माजि भाज लाग उनका जाजाही नाइ नहा मजन, और
दम जात है । किनकर दम साधु सन्ध्यासा का बाता बना कर
किछा गागमटाल लुगिया का लकर रहन है— यह गालिनाम
जिस घर में रहत है वहा के लगन मागमान होजात है । इस
साधु मन टहर हमारा द्रव्य में सतकार बना 'तुम से जो धन
सक अन्तर्धाना धडा के अनुसार नमान (भव) निमान के लिए
बढ़ा दा और इनका तुम्हा लाभ उगमा ।

बहुतर आपस में निन हुए गम हागजान का सल रोजत है
उनमें से किस का नना दख अन्तर्धाना अन्तर्धाना के मुह में पाना
आजात है । टा लाग एक बार उस भा चिना दन है । यह जीत
के मग में उमल हविर न्यो - अन्तर्धाना जाता है त्यों २ बार

मिष्टमाषग भा अन्यन्त उपयोगी है। यदि हम उल्लिखित विषयों पर पूर्ण ध्यान रखें तो द्वापरमय मानवान् बहुत से कष्ट से मुक्त हो सकते हैं।

पाठ १२

भगवान् महावीर

(१)

उन समय प्रभु महावीर के चरणों में नमस्कार हो नि होन ससार के प्राणिमा का दुखों व दुःखों से निवान कर अक्षय सुख के मार्ग में लगया।

प्रायः मानका 'यह समार मदा म है और मदा रहगा। हमका कभी नाग नहीं होता पण्डु परिचयन सदा हुआ करता है। हम परिचयन व प्रभाव से कभी धम का उद्विग्न होनी है व भी पाप करता है। जब भगवान् महावीर का नाम हुआ तब धम कताप-मा हो रहा था। अहा! यह समय बहुत ही अमानक था। उसका बाद आत हो बाग-खंडे हो जात हैं। वैदिकधर्म में रुष-वृत्त्याओं का दौड़दौड़ था। यह के निमित्त अतिमि अतिमि मन-पुन-तप-व के पाप उता जाते थे। व होन पण्डु रमान विन विवान पर कोई माई का लान उनको पुकार पर बान न होता था। वकार गराव पण्डु का रक्त से यह का वग लपपव हाजना थी। बह अचम्ये का बात है कि उस समय के हिन्दू इन कष्टवालों से दया देरनाओं का प्रत्यक्ष होना मानते थे। इन सब पापों से वृत्ति होय उगी थी। मय-व हाहाकार मय गगन था। उस समय में विसा मदान् दुःख को आपश्यका

अच्छ अच्छ वाय पडा करत थे । उस समय उनकी बरा-
बरी का कोई विद्वान नहीं था । कहावत भी है पुन क
पान पाने में हा शक्ति लगत है । इस प्रकार बहुत २
भगवान् योंन अवस्था में आय । इस समय उनकी शरीर
बिन्दुजल नाराग और स्वच्छ था । स्नायुवधन कम हृदय
जिस तरह का बन रहा । निरस्थित था कथ गनगन के
कथा क जैसे प्रसन्न थे । बलाई मनबून पुष्ट और सुन्दर
थी । भुजाने बेश क समान पुष्ट था । ज्ञान मान का प्रिया
क समान श्रुत समान और चाहा था । जगत् प्रमा
भरा हुआ था कि गच्छेच्छा तब दिखाई न पता था ।
जाये हाथी की सूई की तरह पुष्ट था । आनन्द यह है कि महा
श्वर स्वामी की शक्ति-शक्ति बहुत ही अच्छा था । इस
प्रकार भगवान् महेश्वर क ज्ञान और पुण्यशक्ति का धाड़ा-
सा बर्णन है । इसका बाद का अर्थनयनित है भगवान् का महत्ता
की प्रशंसा करता है । जो ना व वाच्यशक्ति न हा विषय से रहते
थे किन्तु अद्वैत का रहस्य । में रहत भगवान् क हृदय में प-
गण्य की तरह रहता । इतना साक्षात्— श्रुति में सुखा नहीं
बना सकता । मित्र लोग हमें सुखा नहीं बना सकते । मरज्जता
हमें सुखी नहीं बना सकती । और अनात्मता भी हम सुखा
नहीं बना सकती । यद्यपि ये सब शक्ति समान क माहा अर्थ का
मुख्य तत्त्व है । मान्य होता है पानु क वाच्यशक्ति मुख्य नहीं द
सकती । श्रेष्ठ ज्ञान का सुखी बनने क नियम अत्यन्त दूर पर
गया होता है । हमारे वाच्यशक्ति न मकर बनती आत्मा का
हा स्वात्मता शक्ति । उसे पवित्र बनाता शक्ति । आत्मा का काम
वाच्यशक्ति महत्ता शक्ति अत्यन्त गुरु है । इसका अर्थ है—

नित्य कर सकत है। याम्य म कर्त्तव्य बजाने समय
 गुरु और मित्र का साथ न हाना चाहिए। कर्त्तव्य-पालन
 में गुरु मित्र की भद्रबुद्धि एवं सहायता है। इस सहाय
 के हान हुए हम आदम कर्त्तव्यपरायण नहीं हो सकने।
 जैसे सूर्य अस्त और सूर्य उदयों तरह के आदमियों का समा
 मना से प्रकाश पहुँचाना है। जैसे ही कर्त्तव्यनिष्ठ मनुष्य
 गुरु मित्र का विचार न करके प्राणीमात्र की भलाई के
 लिए अपना जीवन व्यय कर देता है। ऐसा करने वाले प्राणी
 मनुष्य जगत् में सबके सम्माननीय होते हैं।

पाठ १४

स्वाध्याय

(२)

(प्रश्न)

अज्ञान एक साधारण रोग समझा जाता है। परन्तु
 अधिक दिनार में मान्य होता है कि अज्ञान ही सब रोगों
 का बाध है। यह बात न समझने ही के कारण अज्ञान
 घर २ अज्ञान रोग के रोगी पाये जाते हैं। प्रथम तो
 अज्ञान होने का मोका ही न जाना चाहिए यदि अज्ञान-
 घटाना से क्या ही भी जाय तो शीघ्र चिकित्सा कराना
 चाहिए। यदि चिकित्सा करने में देर हो जाय तो यह
 रोग प्रचल कर घातक कर जाता है, और अन्य रोगों
 का उपसि का कारण होता है।

है । औषधि भी पसी बसी नहीं । तब तो कि रागी का काम भर पोशा न झाड़ । इस अज्ञानता को दूर रहा अतीसार और सग्रहणो राग हा जान म काम भर लुनी हाना पड़ता है । इसलिए राग का परीक्षा या निश्चिन्ता करान समय बंध को परीक्षा कर जाना भी आवश्यक है ।

पाठ १५

प्रतिक्रमण

संसारो जीव अथवा कार्यो म रितने हो साधन रहें तथापि उन्हें कुछ न कुछ दाग लग हा जाना है । गृहस्थता दाग मे सर्वथा रहित हा हा नहीं सकत । क्योंकि सामागिक काय जिना आरम्भ परिग्रह क ना हान और जग आरम्भ परिग्रह है यहा पाप भी अथाय लगता है । चलन स्थिर म भाषन म संपाद रसन म और जीवन निषाद क किसी भी आकाशक कार्य म सदा दाग हा दाग लगा कत है । नाचय यह है कि साधारण गृहस्थ-जीवन मानसिक वाचनिक और कायिक दाग का घर है । गृहस्थ-जीवन को उन्नतना में उन्नत हुआ गृहस्थ महाश्रुतों का पालन नहीं कर सकता । इसलिये संन्यस भगवान् महाश्रुत गृहस्थों को कमजारी समझकर उन्हें एकदाश्रुत पालन का उपदा दिया है । किन्तु कई कारणों मे उन मना में भी कमोर भूल हा आती है । कम उस भूल - सगाधन क लिए प्रतिबन्धन करना आवश्यक है ।

पाठ सौटने को अथान् प्रमादना शुभ योग मे गिरकर अशुभ योग का प्राप्त हान के बाद फिर शुभ योग में वापिस आने का प्रतिबन्धन कहने है । अथवा अशुभ योग का टाकर उत्तरोत्तर शुभ योग में धनता भा प्रतिक्रमण कहना है । पहले तीर्थकर

पाठ १६

व्यापार

(१)

प्राचीन काज में प्रत्येक वर्ण का एक २ निश्चित वर्तमान था। प्राहम्य पण पाठन करण सत्रिय प्रता का रक्षा रत वैश्य व्यापार करने और शूद्र मयावृत्ति करत थे। उस समय कायनिहाज क मियाय कभा एक दूसर का वृत्ति का बाई नहा अपता सकता था। किन्तु अब नमाना जात गया है। इस कारण उल्लिखित वृत्तिया का विभाग था का यो नग रहा है। आजकल प्राहम्य सत्रिय का सत्रिय प्राहम्य का वैश्य प्राहम्य सत्रिया का प्राहम्यसत्रिय वृत्तियों का और शूद्र भी दूसर सब वर्णों क कम घेराक एक करते हैं। किन्तु इस समय में भी वैश्यों का मुख्य काम प्रायः व्यापार ही है। यद्यपि प्राचीन कालान वैश्यों का जितना व्यापार कर वैश्यों के साथ में नहा है फिर भी आन्तर्वर्ष क व्यापार का अधिकता आपकन भी वैश्यों ही क हाथ में है। व्यापार में जिन बातों का आवश्यकता पड़ती है उनमें से जितना क बात इस पाठ में बतलाइ जाती है वह यह है—(१) वायगीजता (२) गुण अध्ययसाय (विचार) (३) क्यमाद (४) उत्तम दुष्टता से व्यापार-व्यवहार (५) मचाई (६) अवचकता (७) मैत्री (८) द्रव्य सेव काज भाव का ज्ञान।

१. वायगीजता—मित्रदाता क बिना व्यापार हो ही नहीं सकता। जो बहुमूल्य वाना वस्तु में अन्य मूल्य का वस्तु मिला

मतिव 'गान'-म-य जाने न पलन आदमी को परस कर
नेन चादि।

१ सगा—को व्यापार में गम आरम्भ करना है। निम्न व्यापार
को सगा का सिक्का उम आता है उम अनापाम हा मफलता
मिलता है। एक कथा प्रसिद्ध है कि—जिसी उगद काटके का
गान एक नेट मचाई में व्यापार करत। एक बार एक प्राहक
लाका पर आया और काट के एक घान ले गया। दुकान पर
मुनाम था उमन १०, छपव को उगद १०) छपव ले लिये। मठ
का उम दुकान पर काटे ता मुनाम न ताराफ बगर कर अपना
चतुगाई को घान मुनाई। उम अनाप था मन्त्री गुन होमे, पर
उमका अनाप पर पानी फिर गया। उनका प्रमथ हाता दूर रहा,
उज्जयिनी पु। अन्त में गरीबदार का घुलवाकर उमक दामधा-
गम किया। हम उगदता म सगा का इतना अधिक स्थानि के न
गई कि उनका काग्यार चमक गया।

२ अयउरना—उगाई न कर्म का कहत है। उगिया का भा
का विधाम नगे करना। यदि वह डीक भूय बनाव, ता भाला
ग मूट हो मद्रमन है। अयउर व्यापार में अयउरना को भी
उमान है।

३ मैवा—या ता अनुपचारन में प्रथम समय मैवा का
आरम्भ करना है किन्तु व्यापार न विनिय। जा सब में मेज
मिनाव नहीं रखता उमे व्यापार में उतना मद्रमन नहीं मिलनी
अिननी मद्रमन का।

४ उय छत्र काव नाव के पान—जिना को व्यापार नहीं
कर सकता। यदि का ता लाभ का उगद हाति उगवता।

मन्द का धन सुन राजा का बड़ा अचम्भा हुआ। उसने राजसभा में जाकर पण्डितों से मन्द के धन का उत्तर पूछा मनु उसका उत्तर बिना का समझ न ले पाया। उसी समय कविवाचाय नामक मुनिगुरु पधार। उन्होंने कहा—

‘आविन कैन’ वही जो निरिदित धर्मधर्म में रत रहता है।
‘विममे सङ्गु’ और धर्म नहीं वह काज दुखहा सहता है॥१॥
‘वदित कैन’ वही इस जिसके जीवन में मञ्जन आने है।
‘वा एर का उगार न करत’ व जीवन-फल में रत है॥२॥
‘आविन कैन’ वही है अजवर’ जो न दुष्ट भाजन करत है।
‘सहा सरल सङ्गुन-राण’ सङ्गुन में जो आने है॥३॥

कविवाचाय का उत्तर सुन राजा ने उनसे कहा—‘महाराज! क्या जानवों का जो धर्म धर्म जान को पड़ा होता है’ वाचाय ‘काल-नाडा’। अन्तर अन्तर और दुखों मनुष्य में मा जाता उच है। एक कहानि सुनिए—

एक विद्वान् विमा आर्य पण्डित दरद द। पण्डित में उन्हा कहा—‘जो विद्वान् न हा नासर् न हा दानो न हा पण्डित न हा धर्मो और गुण न हा वह मनुष्य के काबार का मूग हा है। वह दृष्टिही का कृपा को करत है’। उन्हा दान एक मूग का न दान। उन्हे कहा—‘नाडा’। विद्वान् मनुष्य में दानों गुणता करत दाना दान करत है। वह दाना दाना नहीं कामदण। दान दान विम के कुछ नहीं दानन और विम में दाना दान दान है। दाने मनुष्य दान दान दान है न दान दान का मनुष्य दान दान विमो दान दान नो करत। एक सङ्गुन दान दान विमो और दान मूग से दान दानो दान

गया—'सिद्धिदाता' नाम एक दूसरा म सुखर आपण्ड और निगुण आदमी का गया कहा करते हैं । इसमें उक्त आदमी का कुछ विषयता नहीं है । यदि वह गमभंग्यर हो तो उनका प्रसन्न हो हा । पशोवि गमम आति म अनन्त आत्मा २ गुण पाये जाते हैं । पर हम इस उचित नहीं समझते । हम जान इतने ममता दान हैं सिखा । और गरमा का परमाह नहीं करते । यमुन नाम अपने पाप पर लिए हुए आत्म का उठाने म कारण हो जाते हैं परन्तु हम अपने स्वामी का इच्छानुसार धामा उठा म धामा आनामाना नहीं करते । और हमारा भट्टा या सब हो जाता है । इसलिये गुणहीन आत्मन्मा का धरा धरा नहीं कर सखा ।

परिदृष्टता—निश्चय इस विमल आदमा का उपासक बिसा
जातक से भी मरुती जासकता। अतः हम सब मनुष्य का
अपना मनुष्यता बचाय रखने के लिए सन्तुलित अन्त्य प्राप्त
करना चाहिये।

पाठ १८

भगवान् मन्वीर

(2)

भगवान् न मरना देने के पश्चात् करनगत का आसि हाने
नर लगभग बारह वर्ष का मौन धारण किया था । उस समय
य कठिन से कठिन तपस्या करत थे । वर्षाश्रुतु के चार
महाना म एक ही जगह इस लिए रहत थे कि वर्षा के कारण
प्रगमिन जान रहे पानु पैदा होनात है इस समय भ्रमण

गतर होकर हमर की जरूरत महसूस कैसे कर सकते हैं ? इसी लिए महाबोर प्रभु ने इन्द्र की प्रार्थना का दुकरा दिया और हम लोगों को यह सिखाया कि दुखों में मत डरा । आपत्ति आने पर धीरता से उसका सामना करा । दूसरों के आगे हाथ फैलाकर दया की प्रार्थना करने वालों को दुख दूर नहीं हासिल करने । शान्ति दिमाग कर दया का प्रार्थना करना स्वयं एक दुख है । और जैसे काचड़ से कीचड़ साफ नहीं होती तैसे ही दुख से दुख का नाश नहीं होसकता । प्यार बालका । प्रभु का यह गिरा बरत बन 'पाप्य' है । य वार प्रभु धन्य है जिहो नमस्त आगता आगाजार विशा पर इन्द्र का सेवा आगाजार न की ।

इसके पश्चात् इन्द्र अपने मार्ग चला गया । इधर प्रभु मपरवा करने हुए यत्र तत्र विहार करने लग । एक दिन प्रभु विहार करने करने अघनाचिका नगरी की ओर आगे लग । रास्ते में एक मनुष्य न कदा—“हे प्रभु” यह मार्ग साधा ना पड़ता है परन्तु इसमें एक दृष्टिबिष सब गदना है । उसके भय के मार यदा किमी की पैठ भा नहा है । इसलिये दया करके हमर मार्ग से पधारिये” । उसकी बात सुनकर भगवान् न अपने दि गज्ञान से उस सार्प का पहिचाना । उन्हें मानुस हागया कि यह सब भय है । यह जैसा भयकर मानुस हाता है शम्भु में उतना भयकर नहीं है । यह अपने गति का नृपयोग कर रहा है । यह साचकर उहो-न उस पुरुष के कहने का पालाद न कर उसी मार्ग से जान का जाना । भगवान् वही पदुत्र प्याल धरकर लड़े हो रहे । इनमें से अरहबौतिक नामक साप अपने बिज से बाहर निकला और प्रभु

शीर हिमालय की नारि झटाल बैठे रह। उनके बिगाल चहरे
मे विषाद की एक भी गला व्यक्त न हुए मानों उन्हें खबर
नैन पड़ी हो।

एक समय की बात है कि भगवान् विहार करने हुए पेड़ों-गाव
गाव के समाप बिना कनाए धनु पर दृष्टि उमाकर समाधि में
प्रवृत्त हुए। उस समय एतन् उन के चारित्र की मूर्ध प्रगल्भा की।
एह प्रगल्भा सुनकर एक भगवत् नामक दूत आधिन हुआ।
उसने निश्चय किया कि महावीर का तपस्या से प्रेरित करके एतन्
का नीचा दिखाऊंगा। इस कल्पित भावना से प्रेरित होकर
वह भगवान् के पास आया। उन्हें तपस्या से व्युत्त करने
के लिये उसने एतन् महान तक एमे घागनिघार उपसंग उपस्थित
किय कि जिहें पढ़ने मात्र में ग्लि बपायमान हान लगना
है। उसने सब से पहल धूलि का घरा का। मामूला क्या नहा
एसा भयानक कि भगवान् का सारा शरीर उससे टंक गया यहा
तक कि सौंख जन में भी बाधा हान लगी। अब भगवान् इससे
न डिगे ता उन्हें डाम और मन्त्रुग में इस्त्राया। पथान्
सर्प बिन्दू नेवज्ज आदि भयकर विभिन्न जानवरों का उत्पन्न कर
उन में कष्ट दिलाया परन्तु दाघतपत्वा महावीर ने इन सब
सृष्ट्या का बुद्ध भा न गिना। यहा नहीं शत्रु का शत्रु श्री नहा
मममा। परन्तु भगवत् इन में मन्त्रुग न हुआ कथ की बार ता
उमन प्रति भयकर कष्ट दिया। कथान् उसने बहुत बचनदार
छोट का गाला बड़े आर में प्रभु पर नेंका। कहते हैं इसमें प्रभु
पुनर्तो तट धरती में घम गया परन्तु भयानके न गिर। प्रभु में
धैर्य था उन्हें दह में ममता न थी और कम्तर आत्मा का धनु
मय करत य फिर बड़े में दिग सचन थे। प्रभु की यह विषय

अब हम बाल का विश्वास करा कि बलवान बनने का स्वाधीन उपाय क्या है 'यदि बा' मुझ से यह प्रश्न पूछेगा मैं यह उत्तर दू कि व्यायाम ही एक ऐसा उपाय है जिससे हर एक आदमी बन जा सकता है । और व्यायाम करने हाथ की बात है । इसलिए यह स्वाधीन उपाय है । व्यायाम करने से नगर नगर मजबूत और सुदौल होता है । व्यायाम से नगर के समस्त अवयवों में रक्त प्रवाहित होने से अवयवों में स्फूर्ति उत्पन्न होती तथा दृढ़ता आता है । व्यायाम करने वाला पुरुष अल्पी बूढ़ा प्रभाव नहीं होता और उमराव बुढ़ापे में भी व्यायाम पुरापाय करने की शक्ति बना रहता है । इसके विपरीत कभी व्यायाम न करने वाले पुरुष के विषय काय में उत्साह तथा नश्वरता । वह सदा पराया मुन ताकता और भौंता करता है । अनेक गंगा का स्थान बन जाता और सुख बना रहता है । हम का पिछड़ुल भा नहीं समझ सकता । अतएव एक बालक का व्यायाम अवश्य करना चाहिए ।

व्यायाम के अनेक प्रकार हैं । उनमें मस्तिष्क से काम लेने वालों का धृमना सबसे अधिक लाभदायक है । इसके सिवाय डाइ पनना भी लाभदायक है । धूमने से स्वरद्ध वायु प्राप्त होती और के लिये बहुत लाभ होता और हाजमा सुधरता है । डाइ पनना से पाचनशक्ति तीव्र होता है । मुट्ठर घुमाना भी एक प्रकार का व्यायाम है । इससे मुट्ठाओं में और सीने में रक्तना आता है । किन्तु यह ध्यान में रखना कि अधिक व्यायाम से लाभ के स्थान रहित होता है । अब जब मुँह सूखने लगे मुख से अल्पी

पाठ २०

व्यापार

(३)

व्यापार के लिये जिन आवश्यक वस्तुओं का उत्पन्न पहन
करा गया है उनमें सिद्ध और भी बहुत वस्तुएँ हैं
जिनमें व्यापारी का जानना चाहिए । पहन लिख हुए वस्तुओं
का यदि कोई व्यापारी ज्ञान कर लव किन्तु उसके पास
पूजा न हो तो व्यापार नहीं किया जा सकता । पूर्ण व्यापार
का ज्ञान है । खगदना व्यापार का पहला काम है और
पूजा बिना काय करेगा ? तब यह है कि जिसके
पास पत्र हा नाह वह उधार को हा घर को हा, या
हिम्मत को हा वही व्यापार में हाथ डाले । बिना पर्याप्त
पूजा व्यापार करना मूल्य ही नहीं, दूसरों का फँसाने का
प्रयत्न है । कहावत है—“अज्ञेय पूजा ससमो साध” अर्थात्
अज्ञेय पूजा में कोई सफलता नहीं पा सकता । व्यापार
करने वालों का पूजा का ध्यान रखना पहली बात है ।

* पूजा को जिसने आवश्यकता है उसमें अधिक साध
को है । खगद हुर मान को कामन बुद्धा देने को प्रवृत्ति
का साध कहन है । बिना साध के प्रयत्न ना व्यापार शुरू
हा नही किया जा सकता और शुरू कर ना दिया जाय ता
बहुत जल्दी गलत बन नहीं सकता । जगत् में जितने व्यापार
हन्त हैं उन सब का आधार साध है । साध बहुत मर्या
पूजा है । व्यापार में उ काम साध वस्तुओं में हो सकता

धाड़ा हा ना भी प्रतिष्ठा बना रहती है । जो व्यापारी इन बातों पर ध्यान रखकर व्यापार करेंगे उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होगी ।

पाठ २१

अपनी भूल स्वीकार करना

मनुष्य जब तक सर्वज्ञ नहीं बन जाता तब तक वह भूल का पात्र है । चाहे भा पुण्य चाहे वह वैसा ही विद्या विचारक क्यों न हो । वह प्रतिष्ठा नहीं कर सकता कि मुझ में भूल नहीं हुई मानी जाती या नहीं होगी । हम जिस बात का अच्छा और बहुत अच्छा समझते हैं कदाचित् वह ठीक न हो क्योंकि हमारा ज्ञानाति और स्मरणाति परिमित है भूल नहीं है । अतः यह भूल होना महज है । जब भूल हो जाए तो उसे मान्य होना ही स्वीकार कर लेना चाहिए । जो ऐसा करत है वह सभ्य समाज में उच्च आसन पाते हैं, और वह उन्नत भी हो सकता है क्योंकि वह अपनी अल्प ज्ञानि का ज्ञान है और हठ करने का कुरूप न वह अपने विस्मृत नहीं बना दिया है । इसलिये उनका भ्रूणस्वीकार गुण का सम्मान करना पाम्य है । उनका आत्मा पर वह गुण शासन करता है बना गुणी हो सकता है । इसके विरुद्ध जो अपने अभिमान के मार में जानता हुआ भा भूल स्वीकार नहीं करता मध्य पृथु तो वह आत्म-हानि करता है । उसे पर लगा का धडा नहीं रहता । उसे अपनी भूल

। तुमने उस स्थावर गढ़ दिया तो उन दूसरों के तुम्हारे
 नि केव विचार 'पेदा हाग' निस्तान्द व तुम्ह घृणा की दृष्टि
 गये। हमारे से घस लगे सर्वत्र घृणास्पद होने लग गये
 । हमारे विपक्ष में तुम धर्मशास्त्र के साथ दूसरे के
 गि दगर्त हुए भूत का स्वीकार कर ला तो यह तुम्हारा
 दुर्गम सम्भोग ।

राज्या' यदि तुम्ह दूसरा के सामने अल्प धनमा
 न बनना है और न व का अपमानन का अभ्यास होना
 तो वहन तो भूत हाग हो न वा यदि हा भी जाय क्या
 । अज्ञान हाग का धर्म रहा है तो उसे स्थावर कहेंगे ।
 दा हमारे कहता कि हमारा कहा है आ सत्य है ।
 ह कहा हम कहता कि 'अ हमारा है हमारे मुख से
 बोलता ह वा सत्य है' ।

हा वह हम कहता है । उसे हम म भूत हा कहती है
 न दूसरे से ना । समझ है कभी हमारा भूत तो कहा
 र वह दूसरे का भूत मान्य पड़ने हा । यही कहता
 । अज्ञान हाग हमारा लक्षण हुए भी हमारे ही लक्षण
 न कहानी न बना । वह वर कहती लक्षण पर फिर
 बेचन बना और दूसरे का मान्य हो दिष्ट होते भूत
 हा है । लक्षण कहता उसा लक्षण ही है उस तुम्हें वह
 कोलम हा । यदि लक्षण बिना न तुम्हारे के लक्षणों
 लक्षण लक्षण ही लक्षण वह लक्षण कहेंगे
 लक्षण लक्षण लक्षण लक्षण लक्षण लक्षण है ।

। निराग होते ही आत्मा का ज्यादा मोह जाती है
समे उसके बल की कमी पूरी हो जाती है।

सने का सत्र से अच्छा समय १० वन म १ वन
क रात का है। तृयोदश तब सने से बीमारी होती है।
सी बारह बराबर भी प्रसिद्ध है कि- 'सुबह सांन और
रीजन से हाथ घाना है' आ लाग नियत समय पर साते
और नियत समय पर आग जाने है उनका जरूर सहा
व्यस्य रहना तथा बुद्धि बढ़नी है। परन्तु आ लाग दिन में
ग अनियत समय पर सने आगने है व आलसो हो जाने
तथा उनकी बुद्धि का बुद्धि नहीं होता। हा भाजन करने के
अबान् घेदा आराम करना लाभदायक होता है। गरमी क
नेलो क रातहर का घाँवो निद्रा से मन स चित अनुत्थित
ताता है।

दिन भर काम करने रहने म रात म अच्छा मोह जाता
ह। किन्तु सांन से एहन अधिक भाजन करने म बहाना-
सा का जाता है कामान्ध का अधिक परिधम कामा प-
कना तथा बाहिषत म्ब्र छोटा करने है। इमजिद रात में
भाजन करापि न करना चाहिये। रात में भाजन करने से
अँधेरी भी बनक हाकिदा होती है। भूमि पर सने की अ-
पना एनेम, लाट, मूली एलिवा आदि पर माना अच्छा है
क्योंकि उमोन पर सोन से सात विष्णु आदि के बग्ने
का डर रहता है। मोहुरार घरलो पर सने से गहर में
बरे अँधेरे के रोग उपज हा जाने है।

जोहने विद्वाने को बजें सग स्वच्छ रहना चाहिये।
मेनी रखने से उच्छा देन अँधेरे के दिने हाथ इतोर

मय से मनमान है। दूसरा क आन आने विचार प्रण
 वरन का उह विचार वायु रहान का आर अपन म
 म्पाकार वरान का मनम अधिक प्रात और मय से उत्तम
 उपाय वन है। आ अपन अधिकार क उमाद म डमल
 हा क अनुचित द्वाय आन म्पा वान म्पात का प्रयन
 करना है यद निधय उमल हा है। म्पा वरन म आ
 द्वायतिह हात है य ना कमसतवद वरन म्पा अपन
 विचार नहा वरन और आ निधित हात है य उस
 मय डर क भार न्वाय मा आन है पर द्वाय से मुन
 हात हा उन विचार का निवायति न्वा है। इसनिध
 अपन विचार म सम्मिलित वरन क विवमला का उय
 माग न करना नाति तथा अनुचित द्वाय न डारना
 नाति। किन्तु मन म अपन विचार दूसरो क नामन
 म्पाक और उ म्पाभान का वन करना नाति। यदि व न
 मान ना तस वय न करना नाति।

जस धार्मिक विषय म मतभद हाता है उसा तर स
 मातित सुधार क विषय म मतभद हाता है। अगर तुम्हा
 विचार विमल दूसर से नया मितन ना उनक विषय म बुरा
 विचार मन वरा। उस तुम्हा मन म सुधार का लगन है
 तस दूसरा क मन म ना। विचार वरा कि यदि उनक
 चित्त म सुधार का उन्वट भयना न हाता तो व व्यय हा
 क्या तुम्हा विगय वरन साधारण मनुष्या का तर आ
 मा म्पा म हा आन क्या व्यनति न करन पर उनका
 इद म समाज क अधवान का बाट म वस्मा हा रहा है।
 इसलि उनका नियन पर सन्द न कृग। यदि वास्तव म

मेला से तुम्हें मनावादिन सज्जना मिलगी । तुम दस
समाज आदिवा उधार कर सज्जने और सब के प्यार हो स
कागे । सदा विचार करते रहो कि “६ भगवान् उज्जग
आचरण करने वाले पर यदि मेम न कर सकू तो उस पर कम से
कम मध्यमभाव धारण करें ।

पाठ २८

भगवान् महावीर

(३)

साक्षात् जैस अग्नि में तपने से धमकने लगता है उसी
रह भगवान् महावीर का आत्मा बारह वर्ष की कटित तपस्या
त अग्नि में तपने से केवलज्ञान द्वारा धमकन लगी । इसी
प्रकार उन्हें अम्बुद नामक धाम में श्रुतवाजिका—मही के तार
पर आलोकित के नीचे—वेसाख सुदि दशमी के दिन केवलज्ञान
त प्राप्ति हो गई । जब समाज में कोई भी पसी बस्तु न था
जैसे भगवान् न जानते हो । जो लोग दूसरों की आत्मा
का कर पाप कम करने हैं और समझते हैं कि हमारा
धर्म का किमी का कान। कान भा स्वर न पकगा वे तिर
हुए हैं । यदि कोई साधारण मनुष्य न भा ज्ञान पावे पर
कवलज्ञानी तो जानत ही है । उनसे कुछ दिया नहीं रहता ।
इस कारण का कुछ काम न करना चाहिए ।

जब तीर्थंकरों का केवलज्ञान उत्पन्न होता है तब स्वर्ग
स इन्द्र आदि समस्तदेव को रचना करता है । समस्तदेव
इस ममा को बहुत है जिसमें भगवान् धर्म का उपदग देने
हैं । जब अम्बु महावीर को केवलज्ञान ने आकर

लोगों से तुम्हें मनावाहित सकलता मिलेगा । तुम दस
सप्ताह आरिष्ट उद्धार कर सकोगे और सब के प्यारे हास
होगे । सदा विचार करते रहो कि "हे भगवान्" उल्लास
आचरण करने वाले पर यदि क्रोध न कर सकू तो उस पर कम से
कम मध्यस्थता ही धारण कर ।

पाठ २८

भगवान् महावीर

(३)

सोना जैसे अग्नि में तपने से चमकने लगता है उसी
तरीक़े भगवान् महावीर का आमा बाह्य बर्ष की कठिन तपस्या
का अग्नि में तपने से बेचल्लवान् द्वारा चमकने लगी । इसी
समय उन्हें उम्बुक नामक ग्राम में शत्रुबालिका—नदी के तट
पर गालिवृक्ष के नीचे—धैर्यान्व मुदि दगामी के दिन बेचल्लवान्
का प्राप्ति हो गई । अब समाप्त में कोई भी पक्षी बस्तु नहीं
जिसे भगवान् न जानने हो । जो लोग दूसरों की चान्च
बसा कर पाप कम करते हैं और समझते हैं कि हत्या
दुष्कर्म का क्षमा को क्षमाओं का न सार न पड़गी, वह नि
बुद्ध है । यदि कोई साधारण मनुष्य न भा जोन दादल
बेचल्लवान् तो जानने हो है । उनसे कुछ दिया गल गल ,
जिन कारणों को कुछ काम न करता चाहिए ।

अब नदीपारों को बेचल्लवान् उल्लास होना है जो नदी
से इन्त बाहर सप्तसप्त की रचना होना है । आचार्य
उस नदी को करने हैं जिनमें गल्लगल को का गल्लगल देने
हैं । अब प्रभु महावीर को बेचल्लवान् हुआ न हो ।

जो हम लोग भा उमा लक्ष्मी का पूजा करने है । परन्तु
राज्यछत्र लाग कमल की बात का न समझकर घन बीजत
हा लक्ष्मी समझन और उरी का पूजा करने है । बहुत बानक
राज्य छत्र है । इस सिखा दानि क लाग नहीं दाना ।
हमो २ ना बरी २ दुपटनाएँ हा जाना है । प्राण प्राण
'य' या ना राजको क अल जान का लहर गुना जानी
, या मजान काणि में काग लग जाने का । धार्मिक प्रसंग
र पस हिमाइनक कृप्य करना कदापि उचित नहीं हा मजाना ।
मन्त्रि उस समय हमें धर्म का आगधना करना चाहिये ।
'सी राशि में आगौतम गन्धर्व का कथनज्ञान का प्राप्ति हुई थी
'मन्त्रि उनही स्मृति क त्रिप व्यापार लाग परमपदज्ञ
'आगलगायनम' (गद्य क म्याम) गौतम का नमस्कार हा) लिखने
' । परन्तु 'आगौतमगलगायनम' पसा लिखना और भी
बेव्या है ।

बानका परम पूज्य परमा मा मगधार का नमस्कार करा
अन्तर्गत हमें काय-कन्याम का माग सुझाया । उनके जीवन
। जो निभार मिलें उन पर कला और दूसरी का बजाया ।



કોષિકા કમ્પોઝિટો ૪૩૫

अतिथि बहो अब आ जाता है
 यह अतिथि यही आता है ।
 रह गया आता है यह
 बाई मरगंधा हा जगत् ॥ १० ॥
 जगत् बड़ा ज्ञान का अति
 ज्ञान का यदि बसा न जाता ।
 तो य आता स्वर्ग बन जात
 पूर्व ज्ञानि-रग म मन जात ॥ ११ ॥

—श्री-बाज गिरा

अतिथि-मुद्रा ग न विदित ग न क मुने के निशान बाये
 न न वि न इ कावन मन बना निम हात्रा

पाठ २७

नीतिमय

पहल अतिथि हाथ गुण फर आता बाज ।
 आत मन का हा न बुल, जही न जग में आत ॥ १६ ॥
 सुनि क सबही बात का पहल देहा हत ।
 फिर उत्तर मुख मे कहा या विधि राखो धन ॥ १७ ॥
 परनिदा कर आ मुह, न बड़ा पूर ।
 मत मूर्खों या पै कहें मुहें बहा कूर ॥ १८ ॥
 आ आत्म में बैर करि, मित्र और क साथ ।
 व भगन है बहुत दुख, यह बैरी क हाथ ॥ १९ ॥

पाठ २८

परायकार

गतिता का दूर का उपकार मे आ गति है
 पूर्य है वह क्योंकि अरुण कम ही कौतान है
 विषय कुन में जन्म ही मे नाम बुद्ध हाता नहीं
 क्या मरदह पून में लघु काट है हाता गता ॥१॥
 अन्न भर उपकार करना मानिया का उम है
 कम मे पात्र न दटना मानिया का मर्म है ।
 मय अब तक है उगति तम का पता लगता नहीं
 सर-समारा सामन क्या मय कि सकता बड़ा ॥२॥
 काद क उपकार मे हा मान पान है सभा
 दय पागलप मे हाता नहीं बुद्ध भा कभा ।
 धम्भ भूप आ कही सर का तुल्य क तुल्य हा
 ना इसाम का उभय का एक हा सा मूल्य हा ॥३॥
 आ पराद वान माना धन्य है उग में बड़ा
 द्रव्य ही का आकर का सुपन पाता नहीं ।
 पाम जिसक रजराणि बनल और अरु है
 का कमी बड़ सुरधुता क सन हुआ सन्निग है ॥४॥
 आभा नरदह का कम एक पर-उपकार है
 हात का भूषण बड़े उस बुद्धि का धिक्कार है ।
 मय की जगत् बाध भान कि भा उगति है
 भुजि-धुमर मा कही पाता मदा सम्मान है ॥ ५ ॥

देग-भमता हाट जा पगदग के उपकार म ,
 है लगा, यह क्या न दुबे दुगार पागवार म ? ।
 इंदु नभ का छाड़ जा रहता न हर के माथ में
 भस्म म क्या निम होता यह पराय हाथ में ॥२॥
 —रामचरित उपाध्याय ।

बीबीन- कुम्भीरता बीर- बीद।
 ला नदीयद भावा, तत्र दया बराटाप- पटनाई का भाग्यवा
 (बाय बारम्बा)

ला गरा गन्ध तुम - भाद।
 उमय नदी गुरुधनी- भाग्य नदी
 मलिलश समान वान-कुना
 पुलिमा पुष्पग कर्ग हापी
 चौदहरी पन जेनु- गला वस्त्रे होन वाले प्रसजोव
 कु- अनावगया
 भाग्य मय उर ह य
 पागवा- मनु इंदु- चन्द्रमा
 हर- मगध



कुपनै विहर हाथ परनन घर हाथ
 घामवनै दास हाथ हिन दुरजन नै ॥
 सिधनै सुग हाथ व्याज व्याज अग हाथ
 विधनै विदूष हाथ माला अहिजन नै ।
 विगमनै सम हाथ सकट न व्याप काय
 धने गुन होय, सत्यशर्दा क हरमत ॥३॥

गुरु

(हिंगीनिका ह)

मिथ्यात ज्ञान सिद्धान साधक मुक्तिमार्ग जानिय ।
 करनी करनी सुगति दुगति पुण्य पाप बन्धानिये ॥
 समाज सागरतरननारन गुरु जहान विजानिय ।
 अग माहि गुग्गुलु कह दनागति और काउ न देखिय ॥४॥
 कविता बनारसीदासजी

मुग्गुलु- नैय

बा- दूध पै

पागल- बा उ

मुग्गुलु- अगस्त्य ऋषि

अगति दात- एक प्रकार का भूख कृष्ण

लकड़ा

क चक

निशित्त- चट्टा

कथा- सन्तुष्ट

गद- हथो

केलिन (मवन)- नाकगुहा

विद- फन

वाति- सनुद, मा

विता- गडदा, गट्टा

माया खेल घननय दाह । लाभ-सलिलसायक-दिननाह ॥८॥
 तुम गुनसागर अगम अगार । म्यानजिहान न पहुँच पार ॥
 तट हा तट पर डालन साव । स्वारथ सिद्ध रहा हा हाथ ॥९॥
 प्रभु तुम बार्ति-बल बहु धन । जनन विना नग मटप चटा ॥
 और अदृष सुनस नित चहे । व अरने घर हा नमलहे ॥१०॥
 अगनबाध घूम दिन जान । कीन माह महाविष-यान ॥
 तुम मेया दिव नागन परा । पर मुनिजन मिटि निहचै करो ॥११॥
 जम-लगा मिष्यामठ मूल । जामन मरन लगे पिटि फूल ॥
 सा कब हाविन भगति-कुडार । क नही दुख-फल दातार ॥१२॥
 कलपतरावर चित्राफल । काम पारना नौनिधि मेल ॥
 चिन्तामनि पारस पाषाण । पुण्य पणारथ और महान ॥१३॥
 प सब एक जनम सधाग । विचित्र सुखनार नियाग ॥
 त्रिभुवननाथ नुहारा मय । जनम जनम सुखदायक दय ॥१४॥
 तुम जग बाधव तुम जगनान । असरनसग्न विरद विख्यान ॥
 तुम जग जीवन कर झाल । तुम दाता तुम परम न्यान ॥१५॥
 तुम पुनोन तुम पुण्य पुरान । तुम समदरमा तुम सधनान ॥
 तुम जिन नग्यपुण्य परमम । तुम प्रसा तुम रिपु मा म ॥१६॥
 तुम हा जगभरता नगनान । स्वामि स्वयम् तुम अमनान ॥
 तुम विन तान काल तिहुँछाय । नहि नहि सग्न जावडा कोया ॥१७॥
 नित कारण कहनानिधि नाथ । प्रभु स-मुख जारहम हाथ ॥
 अबलौनिक हाव निखान । नगनिपास दुई दुखदान ॥१८॥
 नर जो तुम चरनाम्बुन वास । हम डा हाहु यही भरदास ॥
 और न कहु पादा भगवान । यह दपान दाचे परदान ॥१९॥

पाठ ३१

गिरधर की कुण्टलियाँ

दौलत पाय न कीचिये सपने म अविमान ।
 चचन जन दिन चारि कौं ठाउँ न रहत निदान ॥
 ठाउँ न रहत निदान निपत जग म यग लीचै ।
 माड बजत मुनाय यिनय मय हा की कीच ॥
 कह गिरधर कबिराय अर यह सय घट नौलन ।
 पाहुन निशिदिन चारि रहत सय ही के दौलत ॥१॥
 साई सय समार म मनलस का खोहार ।
 जब लग पैसा गाँठ में तब लगि ताकी यार ॥
 तब लगि ताकी यार - सग हा सग डालै ।
 पसा रहा न पास यार मुख म नहीं बाज ॥
 कह गिरधर कबिराय जगत का पाहा लखा ।
 करत बगरना शान यार हम गिरला दखा ॥२॥
 मूग मोटे घचन कहि अक्ष उधार ले जाय ।
 लेत परम मुख ऊपे लेक दिया न जाय ॥
 लेक दिया न जाय ऊँच अट नीच बताये ।
 अग उधार का रानि भागते मारन धाये ॥
 कह गिरधर कबिराय रहै जनि मन म कटा ।
 बहुत दिना है जाय कहै तग कागद भूटा ॥३॥
 रम्मा मूनत हो कहा यार हा दिन हन ।
 तुम मे कत है गय अट है है इहि खत ॥
 अट है है इहि मत मून जगुगाया होने ।

हेन्‍ड्री-वाल-शिक्का चाथा भाग

—

भरोदा जेठमल खेठिया

निवेदन

[illegible][illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषयसूची

—१८८३—

(गद्यभाग)

| | | |
|-----------------------------|----------------|----|
| १ अगस्त्य महापौर (१) | | १ |
| २-सर्वम कल्याण नाम | (२८५) | ५ |
| ३-न्यायार्थ | १३-अनकाल वानेव | ६ |
| ४-विद्वत् । अ न द्यातिरु | १४-अनकाल वानेव | १२ |
| ५-आनन्द रत्न | १५-अनकाल वानेव | १६ |
| ६-विद्वत् विद्वत् नाम | १६-अनकाल वानेव | १८ |
| ७ अगस्त्य महापौर (२) | | २० |
| ८ गंगा और उमरा नहर | १७-अनकाल वानेव | २४ |
| ९-चन्द्र | १८-अनकाल वानेव | २ |
| १०-अनकाल | १९-अनकाल वानेव | ३१ |
| ११-आतु प्रथ | (२८५) | ३३ |
| १२-अनकाल | १२-अनकाल वानेव | ३८ |
| १३-अनकाल का दौ चो पर प्रसार | १३-अनकाल वानेव | ४१ |
| १४-सर्वम उवा प्रसार | १४-अनकाल वानेव | ४३ |
| १५-अनकाल का नल | (२८५) | ४५ |
| १६-अनकाल | | ४७ |
| १७-अनकाल | १७-अनकाल वानेव | ४९ |
| १८-अनकाल | | ५३ |
| १९-अनकाल | १९-अनकाल वानेव | ५५ |
| २०-अनकाल | | ५७ |



[illegible]

धृता । मित्र लोग हमें मुसी नहीं बना सकते । सपत्नता हमें
भी नहीं बना सकती । यद्यपि ये सब धार्मिक मन्त्रों के मोहो
नों का मुक्त देने वाला मान्य होनी है । यन्त्रु ये वास्तविक
नहीं दे सकते । प्रत्येक भाषा का मुक्त बनने के लिये
हमें पैरों पर खड़ा होना चाहिए । दूसरों का सहारा न लेकर
हमनी धर्म का ही खोजना चाहिए, उसे पवित्र बनाना
है । धर्म का काम, शोध, लाभ और मद माया आदि
नहीं है । हमें समझना है कि एक मानव का परम
लक्ष्य है । यह विचार कर मंगलान् न शक्ति के निष्पत्ति
है । उन्होंने धर्म निष्पत्ति धर्म बड़े भारी बहिष्करण में
है । यन्त्रु उसने धर्म मान्यता न ही और कुछ दिन और
हमारी ये करने का अग्रह दिया । मंगलान् को मन्त्रों के
मार्ग में यद्यपि काम साथ हमें दृष्टान्ती प्रतीत होते थे
यन्त्रु व करने बड़े भारी का अग्रह न टाक सका । उन्होंने जैसे
मे ही वह और बात । यद्यपि हम मंगलान् के साथ शक्ति
की ही मन्त्रों के समान है । अन्तर्गत के मन्त्र पदाव
की के कुलधर्म की भावना की बात में यह हमें दिखाना
है ।

कम समय हमें ने शक्ति में अन्तर शक्ति अन्तर मन्त्रों
है । हम अन्तर अन्तर नष्ट की शक्ति शक्ति के बहिष्करण
की और अन्तरों में शक्ति हो रहा था, अब वह समय
हम अन्तरों में सदा हुआ दिखाने हम मन्त्र । यन्त्रु के
में हम ही मन्त्र न हुआ ।

शक्ति में है । मंगलान् को मन्त्रों के मन्त्रों के मन्त्रों
है । हमें दूसरों के मन्त्रों के मन्त्रों के मन्त्रों की

देकर सदा साथ रह'। मण्डन ने उत्तर दिया—
 'हट'। अर्धरत्न बोला दूसरों का सम्बन्ध नहीं लिखा करत। व
 मन्ना ही मुझको से सखी का सहूँ का पार करत है"।

54

१—अन्तरात् आहारं च तस्य ज्ञानं दूषणं तत्र दत्ता की कला इत्येतत् स्वी ।

२-कदम्ब काशीन कब पैदा हुए, उनकी काया का क्या राज्य था।

१—क्या यह मानने की जगह है, हाँ या नहीं ?

१—कनक लाल दा 'भारत' नाम हिन्दी में एक अच्छा ।

पृष्ठ-२

अथ सै भण्डा बाव

[illegible]

ਕੁਝ ਹੋਰ ਗੱਲਾਂ ਦੇ ਫਲਸਰੂਪ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ

पाठ—३

सामाजिक

परिहर्षा—सुमतिराज ! आज पाठशाळा दर मे कथी
गया ? सब बताओ राख मे मनन लग है !

सुमति—जी नहीं दर मे सीधा यही आ रहा है । आज
हमी या मान बात न सामाजिक की थी इली मे इनकी
बर हो गई है ।

परिहर्षा—बहुत ही । कपूत यह बताओ सामाजिक
कम करने है ?

सुमति—एक अगह काखन बिदाहर देह जाना, मुन बन्दिता
अगहर बाजका यदि बरकदपन बजन का काम यह ता धरती
देखाए दर बजका सामाजिक बहराया है । इन रूप में ४०
मिनट लगे गइरा पड़ता है ।

परिहर्षा—सुमतिराज ! मुन इतिहास सामाजिक करने
हा दर ता बहा कपूती काम है । किन्तु सामाजिक का बख्ख
समझकर काम ता मान मे सुगम्य हा ज्ञाप । असन काम ता
दर है कि कामन उमाहर देह मे ही सामाजिक बहो कर
लगी ।

सुमति—आज ! काम हा सामाजिक का बख्ख काम
का कपूत बर्कद । सामाजिक किस करने है ?

परिहर्षा मे सब लगी की कर काम बरक काम—
बन्दिता ! दोबो काम सामाजिक काम देह कर है ।
दर लगी मे कामकर काम बरकद कर है । कामकर
बकद की कामकर काम बरकद कर है । किन्तु उमाहर

गीर मन भाव हा मामाधिक है। हमका यह धर्म हुआ कि मन न था किसे बिना निर्दिष्ट मामाधिक महो हा सवता। अतः न क हम दावो स बचकर मन की शुद्धि-पूर्वक सामाधिक करना चाहिए।

मामाधिक म मन शुद्धि का जैसी आवश्यकता है वैसी चेतन-शुद्धि का भी। मौन धारण करना सगुण है। यदि यह हा सक, ता हितायह विषय कामन और सत्य एवम ही होना चाहिए। सामाधिक कार्यो में सादा उरदा न करना चाहिए। असत्य सत्यामत्य—मिथ कपण्युन एवम भी न मानना चाहिए। एवम क हम दावो का परिहार करना अत्या आवश्यक है।

मामाधिक में गीर शुद्ध रखना भी आवश्यक है। क्योंकि शास्त्रकार म ईश्वर की शुद्धि का स्मरण रहता है। दूसर साग "यह प्रतपान है" ऐसा समझ सकन है। गीर की शुद्धि का माप बाध उपकरण और स्थान का शुद्धि का निकट सम्बन्ध है। इस लिए ये सब शुद्ध होने चाहिए। गृहस्थों का अन्तरम शुद्धि बाध शुद्धि पर निर्भर है। यह बात सम्य में रख कर अत्याध सब विधायक कामन में लायी चाहिए।

प्रश्न

- १—शुद्धि किसे कहन है ?
- २—शुद्धि का क्या मतलब है ?
- ३—शुद्धि के सम्य मन्त्र कौ कहा करना चाहिए ?
- ४—मन के दस दश निशानो।
- ५—शुद्धि किसे लिए हो गया है ?

नी हो रहते—अतिथि-सभार प्रत्यक्ष अनुपम का प्रथम वन्य
। हम यथा-शक्ति धनता वन्य पूरा करने का चेष्टा करते हैं ।
उमें ता हव कुछ अधिक नहीं करते ।

उनक इस हठ के कारण कई एक अवसर आ चुके थे जब
हैं सारा भाजन अतिथियों की दक्ष निराहार रहना पड़ा
। फिर भी कभी उन्होंने अपना हाथ खींचने का आवश्यकता
हो समझा । अब जब कि इनका सामान भी धीरे धीरे समाप्त
होने लगा तो उनकी व्याकुलता पड़ा । बड़ा पिता तो अपनी
स हीन दशा पर इतना व्याकुल हुआ कि बीमार पड़ गया ।
। पिता के बीमार पड़ जाने पर बेचारा लड़का बहुत घब-
राया । उनकी अवस्था इतनी दान दान होगई थी पर किसीने
निर्भी सहायता का आवश्यकता न समझी । बड़े की दशा उस
तरा खराब होती जा रहा था । अन्त में बड़े ने अपने जन्म-
स्थान में पहुँचने का इच्छा प्रकट की । उसे विरहास-सा होगया
था कि यहाँ पहुँचने पर यह सब सकता है । लड़के ने पिता
की इच्छा के अनुसार तुरन्त ही चजने का तयारी की लेकिन
असक पास इतने पैस न थे कि वे दानों का सपारी ले लेंते ।
लड़का बेचारा बड़े सोच में पड़ गया । अमीत्रक उन्होंने दूसरों
की सहायता हा की थी । क्या किसी से कुछ माँगने का अव-
सर न था था ।

। आभिर लडक क पास आ बुद्ध दाम थ, वे दे कर निस्ता
 तप उमने अपने धामार पिता का एक गाड़ी पर चढ़ा दिया ।
 धन पैदा हो गाड़ी क पीछे पीछे भागता हुआ चजन लगा ।
 हर दिन का रास्ता था । गाड़िया धान निकल जाता थी और
 यह बचारा पाइ हा रूढ़ जाता था पर रात का जहाँ गाड़िया
 विमान करने का शहरों यहाँ यह भाकर अपने पिता की
 मुष्मा करने लगता । आ लाग उन गाड़ियों पर ये वे बराबर
 इस लडक का साहम और उसका पितृमर्क देख रह थे ।
 धन में यह दगा हो गए कि लडक क पैर दौड़ते दौड़ते झिल
 गए, पफावट में उसका टाँग काबन लगों, जात में उसका
 दुबेज गरीर टिडुर गया, तब मावियों ने दया करके उसे भी
 गाड़ी पर चढ़ा लिया । इस तरह व पिता पुन अपने घर
 पहुँच गए ।

पर पहुँचने पर बूढ़ा सबमुच चढ़ा हा गया । व दोनों
 पिता पुत्र फिर एक बार रोगुणार में लग । इस बार उन्हें बहुत
 आनन्द हुआ और जीव हा व धनधान हो गए । लेकिन उन्होंने
 प्रतिपक्षकार की कवना पुराना अदत का नहीं छोड़ा ।

अथ

१—अतिशय-सुख कर्त करवा कहिये ।

२—उदके ने अपने निता के लिए क्या किया ?

३—‘देवतेज अतिशय अर्थि, पाण्डुस’ इन पाणों के पर्याय
 नामों का उदाहरण ।

४—तो कानी को करने पाणों में दासगो ।

तुम तो जागे रहो और फिर आ मुसकिल वहा उतर प व
स्कर्जतर पर सगर हुए। सिवा शरीर की और वे दनाइन
होगा में उने लगे। वे बाहर जाये उतर पहे और जाने-जाने
में का बन दिव।

हो तो मुझे कभी उस तरह का रैन में दया करने का कर
कर रही नि। का बिल्ला नहीं और हा हिदुस्मान में भी
मा रैन करने का कर हा ना है। पर मैं कहचन में।

दुन हा गगन हवाहा स्त्रन से सिवागह स्त्रन गह
रा ललन रन करने का कवम्पा पर विवर हा रहा है।
हा में दव स्त्रन करने। इन में दव स्त्रन राह क समीर
हा और दव स्त्रनमा स्त्रनपर क समीर। हावहा में दव
स्त्रनविद्वन और दव में दव सी प्रंट नचे हा। द वी
हा कि हाजी नग रं ठग म दवम कट कर नचे दव
महा दव।

नव क ललन स्त्रन नाम निगट में मगट हवाहा मुसकिली
का ललन व कवम्पा हाव दव है। ललन का दवहा
ललन हो। इन ललन रन क दवम व दिने नचे दव
हाहा दव हा मव दव ना है।

प्रश्न

- १-कव दव कहे हा व दव वी है। दवहा दव हाव दव।
- २-कवहा हा दिने दव है।
- ३-कवहा म के ललन व वी दिने दव है। वी वी वी वी वी
व व वी वी है।
- ४-कवहा म के ललन व वी है।

पाठ—६

चेचक

चेचक बड़ा भयानक रोग है । उसका रागा को बहुत हा-
 बस होना है । अगर टीक तरह से उसका चिकित्सा-सुध्दा न
 हाता बहुधा परिहारा भयदुर हाता है । चेचक क बामार का
 बडा सवधाना से रखना आवश्यक है । जरा भा लापरवाही
 स रागा हाथ नहीं रहता । इस दग म तो यह राग प्राय
 हरमात्र गार पछटता है । इसम हज़ारों की सख्या म बचे मर
 आते हैं ।

चेचक दून का धानरी है । घर में एक लड़क क हान मे
 निर यह बहुधा समा लड़की क हाता ह । चेचक निकलने क
 बामार यहा है कि रागा का पदन सर्दिना लगन लगना है ।
 सके बाद खुस्रा चढ़ आता है और कना के भा हाता है ।
 तमान गार में छोटे-बूटे दाने भलजन लगते हैं मुह पर
 मुन्नी दौड आती है । कई जिन में दाने बड़े हा आत है और
 उन में पार पड़ आता है ।

चेचक क दाने कमा इतने मयकर दाने हैं कि उनकी पत्रह
 म रागा का गार हा मराय हा आता है । कभी-कमा किसी
 रागा का झिल्ले हा आता रहना है । इसका कारण यही है कि
 चेचक क दाने प्राय तमान गार में निकलन दे । उनमे आख
 आम कमा कई जग चढ़ना नहीं रहना । दानों क मुखन में
 गडबड हान से ही खराबा उत्पन्न होना है ।

राग का जार कम होने पर दाने स्वय मुखने लगत है ।
 फिर बिलकुल मुख आने पर पपवा उतर जाती है । तमा बामार



१—माल का माथ हृद दक्षे पर गिर जाय तभी माल गरी
म अधिक लाभ का सम्भावना रहता है ।

१०—दसगिर का, जहां से माल आता हो माथ मद्रा
ज रहना चाहिए, जिसमें तला-मद्रा का हाज मानुम रह ।

भरन

-भारतवर्ष व्यापार कैसा चलता है भार क्यों ?

-किसी वसा जति को बनाओ जो व्यापार क बल पर बढ़ी-बढ़ी हो ?

-व्यापार-सम्बन्धी कुछ नास-नास नियम बनाओ ?

-दसगिर किसे कहते हैं ?

पाठ—११

भ्रातृ प्रेम

१० सन १४८४ की घात है । एक बार पुनर्गन्त देना क तिस
। नगर में एक अहात गोष्ठा था रहा था । उस अहात में
गमन बारह सौ मनुष्य थे । रात में महाद्व की जापर
हा स यह एक अहात स टकरा गया । अतः अहात की पैदी
द्व होशान में उसमें पाना भर आया । यह दगा दल यात्रियों
। मानों पाठ मार गया अहांत हिन्दगी का आशा त्याग दी ।
जान अहात का वचना अतमय जान एक डोंगा निकाल
। और आहोमा खान-खाने का सामान साथ म लेकर रवाना
आ । सब ने चाहा कि हम आगा पर चढ़ कर अपने साथ
चों पर चढ़े हुए लोगों में नगा सज्जवारों में उनका सामना
या और किसी का न जाने दिया । क्योंकि ज्यादा पाकू हाने



होगा के रूप जानका मय था। कप्तान सिर्फ उर्ध्वान आरुमियों
। डोंगा में बैठाकर चला। जब विरोध आता है तब अकेला
हिंसा। इस नियम के अनुसार यहाँ भी आपत्ति पर
। सति आन लगा। कप्तान पीमार होगया और शाम ही मर
। उसक मरत हा "तु तू-मे में" हाने लगा। प्रत्येक अपने
। सब का सरदार माने लगा। यह दुर्दशा देख दुःख समझ
। रो न एक बड़े आदमा की कप्तान चुना।

दुःख दिन धीने। किनार का वहीं पता नहीं चला और खाने
। न का सामान समाप्त हान आया। कप्तान ने कहा-भाजन
। अधिक से अधिक तान दिन चल सकता है। इतना सामग्री से
। म मय का निशाह हाना कटित है। इस लिये सब के नाम की
। कटिया डाली जाय और प्रत्येक चौकी बिट्टा म जिसका नाम
। केत उले समुद्र में फेंक दिया जाय। इस बात को सबने
। पनारकिता। सब के नाम की बिट्टिया डाली गई, परन्तु कप्तान
। के पादों और एक पट्टी के नाम का बिट्टिया नहीं डाला गई
। यदि उनकी आवश्यकता था। उनके नाम की बिट्टिया
। केनो उद्गारों और की शायना करते हुए समुद्र में शाय गैराए।
। के चोंप के गिरने का समय आया तो उसका मंगा छाड़ा
। गई, आ उसा डोंगा पर मवार था हवा-बहा हाकर उठा और
। गई के गल म लिपट कर बाजा — 'मेरा' मेर जात आ आप
। यहाँ मर सफने। आप मेर बड़े भारी हैं। आपक ऊपर अपने
। शाय न्याहार कर दूंगा पर आपका मरने न दूंगा। आप
। विरहित हैं। आपक ऊपर खा और सब बाल बच्चों का मार
। है। न कुपारा हूँ अतएव आपक यदंत मरा मर जाना हा अच्छा
। है।

शाय मार का प्रमतामयी बात सुन बड़ा भारी भौंकाहाना





सन १६०० ई० का वक्त है। दक्षिण अफ्रिका में एक लड़ाई रहा थी। उस लड़ाई में मदद की पट्टा इस्तेमाल थी। उसी उप बहाक एक कादकता सर रायट वेडन पावेल, ने साचा क्या छोट-छोटे बच्चे भी जिम्मा तरह का सहायता कर रहे हैं। मुरान पराछा के लिए एक स्काउट टाला पहले ल तज्जारे का गद्। उस टोपी ने लड़ाई के मैदान में यही तुरा के साथ अपना नाम प्रारम्भ किया। उसने अंग्रेजी का का बहुत मदद पहुँचा।

एस दिन क्या था स्काउटों के दल के दल तैयार हुए। जे हा समय में और तनाम दलों ने भी स्काउट सना की योगिता स्वीकार का। और अब तो हर एक दल में, हर एक



और करने जैसा धम म ता गया और गढ़ावता का और भी
का स्थान दिया गया है ।

प्रश्न

१—स्वाउट हाना क्या अच्छा है ?

२—पहन-पहन स्वाउट क्या बने ?

३—स्वाउटों से हमें क्या मया हो सकता है ?

४—क्या तुम स्वाउट हाना पसन्द करते हो और
क्या ?

पाठ—१३

प्रकाश का पौधों पर प्रभाव

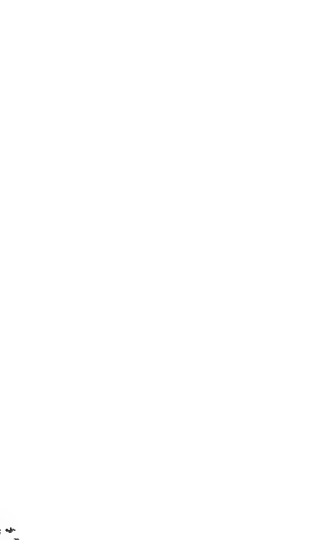
सब क प्रकाश का पौधा और प्राणियों पर क्या प्रभाव
पड़ता है हम बात का ज्ञान करने के लिए अमरावती के
महाराष्ट्र नगर में एक प्रयोगशाला खुली है । प्रयोगशाला में बड़े
बड़े कमरे हैं और उनका छतें बिजहुल गान का बना है ताकि
सब का प्रकाश बे-शकनाक आता-जाता रहे । गान सब जगह
एक से नहीं है । कहीं नीला है कहीं बैंगनी कहीं लाल और
कहीं हरे । हम रंग के कारण कमरों में जो द्वार द्वार पौधों के
बसाये लगाये गये हैं उनपर कड़ा धूप नहीं पड़ती । इन भिन्न
भिन्न रंगशाला पौधों के नाम से जब कोई स्त्री एक धर्माच स
दुसर में जाती है तो पग-पग पर उसकी बदलती हुई पाशाक
मिलत हो सकती है । इससे अज्ञात प्रयोगशाला में खुलने और
बन्द होना बाल लाइ के ऊँचे पुज हैं निम्न बिजनी के धन बड़े



पि करत है। बुद्ध गुण वन बुद्ध हरी पात बुद्ध पद बुद्ध
 कार बुद्ध दुसर बुद्ध पात बुद्धान की दु का आकार धारण
 क वच जाने है। एसी साधन गाता की दु एसी में एसा
 व जाता है कि उन जल्दी काई पहचान ही नहीं मफना।
 हा का बुद्ध मन पढ़त है इसलिये उसका रंग और भी
 पी म निजता जुलता हाता है। अमरुद पर रहनवाला की दु
 क उस पड़ का गाटी का तरह हाता है। गानर बिन्दू पुगन
 स और मरकुल का जहा का तरह हात है और य रहन नी
 कुर एसी हा जगद है। गिदू भोगुर कार कंठगाद का
 १ उनक रहन क स्थान घान या तिल क पायी का तरह ही
 ला है। जाल का बाध जाल का तरह जाल रग का हाता
 १। दुमनी का उगाने क लिय तितनी मः एक वनका आकार
 लिय कव रिपना रहता है। एसा म सहज म काई आर
 सिक पम नहीं आता। तितजा क पल विविध रंग क इसनिर
 नि है कि यह घटत तरह क जली में आमाना म रिप जाय।
 नितजा क ऊपर क पल हरियारी क निचज भाग की भाति
 निचज रंग के होत है। यह विभाम हरियाला म ही करती
 पर उदन क समय उसक माफ नात पल निचज आकार
 क नाच रिप जात है। अब यह जल पर बैठता है ता उस दल
 पर जल का हा म्रम हाता है।
 १ गाह मगर, घड़ियाल अदि जायों क गरीर जल में पड़
 ए घट पत्थर या मिट्टा क टाल का तरह ही हात है। जाल
 जिता रंग क पगारी में रिपकर मजस रहता है। पाय रिप
 जना कार निगद ता अरने से बड़ जीवों का रूप धारण
 करक बुद्ध का दरा दते हैं।

मार सधन वन म रहता है। हर-हर पड़ी में पड़नी हुदे





पद्य भाग

पाठ—२३

वर्षा

(१)

दूधी छपट गहरे नई हबिलिनि में द्यारै ।
 पिरा घग घनघार, गगन में वर्ण ध्यारै ।
 छार अपने साथ विविध रंगों की सारी
 इन्द्रधनुष की आजब बनी है स्वतः-दिनारी
 है धरा जगना बना सहि मण्डल पर भूमता ।
 जलित झताओं का निरख, मुह मुहकर मुख भूमती ॥

(२)

इमाजिये द्यारै आज तन पर हरियाली ।
 मा क दशन हत घड़ा है मुखपर जाली ॥
 बड़ी आ रहा सम्रा, आज है डाली डाली ।
 मा का भवन पकड़ गोद में चढ़ने वाली ।
 घड़ न सकेगी यद्वि वे एक साथ सब गाद में ।
 फिर भी मा का सहद रस सम पायेगा मोद में ॥

(१)

अव्यक्त क इति निर्दिष्ट गत से बढ़ना सीखो ।
 अत्यन्त क सर्वोच्च गिहर पर बढ़ना सीखो ॥
 अलिप्त ज्ञान से मरी प्रकृति का बढ़ना सीखो ।
 दिव्य-दीप्त म सीम पग म बढ़ना सीखो ॥

पाठ २६

परोपकार

हीनता का दूर कर उपकार में आ सीन है
 पूज्य दे वह, क्योंकि अच्छा कम ही बीजान है ।
 दिव्य बुद्ध में ज्ञान ही से ज्ञान कुछ हाता नहीं
 क्या मनोहर बुद्ध में लक्षु कीट है हाता नहीं ॥ १ ॥
 अन्न भर उपकार करना, जानियों का धर्म है
 धर्म से पात्रे न हटना जानियों का मर्म है ।
 सुय जब तक है उदित तम का पना लगता नहीं
 खर-समारथ सामने क्या मेघ टिक सकता कहीं ? ॥ २ ॥
 अन्य क उपकार से ही मान पात्रे दे समो,
 व्यथ वेगटाप से हाता नहीं कुछ भा कमी ।
 वस्त्र भूषण जो कहीं खर का तुल्य क तुल्य हो
 ता इक्ष्मासे क्या उभय का एक ही सा मूल्य हो ॥ ३ ॥
 आ पराये काम जाता धन्य है जग में यही,
 दम्प हा का ओढ़कर कोई सुयश पाता नहीं ।

पाठ—२८

मित्रता

आओ तु रीगाए में नाली मीन बसाय ।
 सजा त्रिप विन मित्र की करज दीगर जाय ॥ १ ॥
 मीनि करनीनि नन नही दाहिद दीपन जाहि ।
 मीन सजा ए धाल है तिनका करजग माहि ॥ २ ॥
 मीन करनीन बनावई रहै विगन लुहर ।
 मीन नही कह नूर है आद विगन लगार ॥ ३ ॥
 धनसमबु ननम धरम सम नम वव मीन बनाय ।
 नागो करनीनाय कहि एीजे मगम मिटाय ॥ ४ ॥
 कोन न कहवा नहीं मन की पीड़ा बाह ।
 मिन मीन परबानिय तब यह दये रराय ॥ ५ ॥
 एन मीन न काजिय जरी लखपता घाल ।
 चागा चारी लगवरी करनी कर यदाय ॥ ६ ॥
 मित्रता विसवाय नम कोर न जग में बाय ।
 आ विसवाय की घाल है बहु अपरमी लाय ॥ ७ ॥
 कहिन मित्रता आरिय जोर तारिय माहि ।
 नागें दाऊन क दाव मगट है जाहि ॥ ८ ॥
 पियत मैजिय मित्रकी तनधन खरख मिजात ।
 कपट बाजे बसत म कर है तरा काज ॥ ९ ॥
 मुख म बाज मिष्ट जा उर में रागे घाल ।
 मीत नही यह दुष्ट है, मुरत त्यागिये घाल ॥ १० ॥

शरीर में विषाणु का प्रवेश



पाठ—३०

घोरोनिर्णय

[१]

पानि न लिख्यत गान म बन्ति न कवि सन धार ।
बन्तिविषय की धारिया विधति न हार—बन्तार ॥

[२]

मन्त्रदत्त ना कहते मार, हे मय काम निहाय ।
कहिप की बल रहि गयो रचनानी का नाम ॥

[३]

ह टाढ़ आ टाढ़ प कान्त मार मनिमंद ।
पर पर भावत-भाग ते भर मूरि अपचन्द ॥

[४]

निद्र मुननिद्र कथना कथन निज प्रति सौ-माधार ।
न ते भार भद भन पिण्ड पुकारनहार ॥

[५]

दखन हा न भामदे क्या न आर दुरि गह ।
चित्र निर्मित सचि रादग अप धरधर कान्ति दह ॥

लहरचन्द मेठिया



Letter to John

द्विषया तु नमः

[illegible]

विषयानुक्रम

| विषय | पृष्ठ |
|-------------------|-------|
| मन वाचना | १ |
| धर्मशास्त्र ज्ञान | २ |
| मन वाचना | ३ |
| मन वाचना | ४ |
| मन वाचना | ५ |
| मन वाचना | ६ |
| मन वाचना | ७ |
| मन वाचना | ८ |
| मन वाचना | ९ |
| मन वाचना | १० |
| मन वाचना | ११ |
| मन वाचना | १२ |
| मन वाचना | १३ |
| मन वाचना | १४ |
| मन वाचना | १५ |
| मन वाचना | १६ |
| मन वाचना | १७ |
| मन वाचना | १८ |
| मन वाचना | १९ |
| मन वाचना | २० |
| मन वाचना | २१ |
| मन वाचना | २२ |
| मन वाचना | २३ |
| मन वाचना | २४ |
| मन वाचना | २५ |
| मन वाचना | २६ |
| मन वाचना | २७ |
| मन वाचना | २८ |
| मन वाचना | २९ |
| मन वाचना | ३० |

(२)

जहाँ की मिली वायु है जीवदानी ।
जहाँ का मिदा वह म अन्नपानी ॥
मरी जीम म है जहाँ की सुगानी ।
वही जम की मृमि है मृमि राना ॥

(३)

छगी घृत र्था देह में भा हमारा ।
कभी चित्त म हासकान न-यारी ॥
रनाती रही दह का भो निरागी ।
बिसे धूज एमा सुहाती न हागी ॥

(४)

पिता दूध माता हम पाजनी है ।
हमार समी कष्ट भा राजनी है ॥
रसी माति है जग की मू उदारा ।
सदा सहृद्यों में सुखों का सहारा ॥

(५)

कहीं जा रने चाहता ओ पहा है ।
रहे सामन ज्ञान की ओ मदी है ॥
नहीं हर्षि प्यारी कभी मूलती है ।
दृष्टा लाबनों में सदा मूळती है ॥

(६)

वधा रह है नेह त्यो ही दुख है
नहीं रह कष्ट न हुआ दुख है ॥

(११)

दया-नाथ पसी दमें दुद्धि राजे ।
 दगा दग की दस दानी पसीजे ॥
 दुखों में बचान रहें देग प्यारा ।
 बनाये उस सन्ध सन्धम द्वारा ॥



कठिन शब्दों का अर्थ

विष्टा—दण्ड । दौ—द्वार । दौ—दौ—दौख देने वाली । दिष्टा—दण्ड
 दण्ड बिना दुष्ट । दुखी—दौखी बेली । दुमिरनी—दण्ड मरिचों की लकी ।
 मरिच—मरिच । मिष्टी—दुष्ट दण्ड मरिचों के । दिष्टा दण्ड के, दण्ड दण्ड ।
 दण्ड—दण्डनी । दु—दुष्ट । मरि—मरिच । दण्ड—दण्ड । मरि—मरिच ।
 दुष्ट—दण्ड मरिच । दुष्ट—दण्ड । दण्ड—दण्ड मरिचों की लकी । मरि—मरिच
 लकी । दौखी—(दौख) दिष्टे हुए को न मरने बड़ा दण्ड का दुष्ट
 बना देने बड़ा दण्ड मरिच ।



पाठ ६ ठा ।

नियन्ध लिखने की रीति ।

हम किसी विषय का पूरा का सम्पादन करें और उससे
 फरोपहार करना चाहें तो हमारे लिये दो ही मार्ग हैं । या तो उसे
 पद्यन द्वारा व्यक्त करें या अक्ष द्वारा । पद्य या पद्यन्य द्वारा जो
 विचार व्यक्त किये जाते हैं उनसे सार्वकालिक, सार्वदेशिक
 और साधनिक लाभ नहीं उठाया जा सकता । परन्तु यदि उन्हीं

(११)

हवा-काव्य लगी हवे बुद्धि बाज ।
 हवा देग बी मैल ह नी परा ज ॥
 गुल्लो का बचान रहे देग प्यारा ।
 बनावे राम राम्य बाबम हारा ॥



वर्तित शब्दों के अर्थ

विद्या—विद्या । दी—दी । दी—दी । दी—दी । दी—दी । दी—दी ।
 हवा—हवा । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।
 गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो । गुल्लो—गुल्लो ।



पाठ ६ ठा ।

निषेध लिखने की रीति ।

हम किसी विषय का पूरा ज्ञान सम्पादन करें और उससे
 परोपकार करना चाहें तो हमारे लिये दो ही मार्ग हैं । या तो उसे
 प्रत्यक्ष द्वारा स्पष्ट करें या अप्रत्यक्ष द्वारा । प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष द्वारा जो
 विचार स्पष्ट दिखे जाते हैं उनमें सार्वजनिक, सार्वदशिक
 और आध्यात्मिक ग्राम नहीं उदाया जा सकता । परन्तु यदि ऊर्ध्व

में जिन नयों वस्तुओं का जन्म है उन्हें भी उसी प्रकार विभिन्न विभागों में विभक्त करना । यदि विषय का विभाग न किया जायगा तो नदबड़ एक जगह और एक जगह की बात दूसरी जगह फिर आयगा । मानना कि भगवान् महावीर क जीवन् पर हमें एक निश्चय मिलता है तो हमें इस प्रकार विषय-विभाग करना चाहिए—

१—जन्म के पूर्व का काल और समाधि की अवस्था ।

२—भगवान् का जन्म और बाल्यकाल ।

३—यौवनकाल, मोक्षिन्ता और शाला ।

४—निराकरण ।

५—करुणान की प्राप्ति और धर्मोपदेश ।

६—निर्वाण ।

एक बात और भी ध्यान रखन योग्य है । विषय-विभाग करते लिखते समय यदि एक भाग का उचित सङ्ग्रहित जन्मा कर दिया जाय और दूसरे का विस्तृत ज्ञान तो वह ऐसा भद्रा मायूम होगा जैसे किसी मनुष्य के पैर बहुत छोट हो, गद्देन छेड़ हाथ का हा और न छट्टर तक जाग निकलता हो । बंगला के स्वर्गीय पण्डित गुरुगुरुवार बकिमचन्द्र बह्मराष्ट्राय ने इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते निम्नलिखित हैं । उनमें ओ विषय आयोजन है, यहाँ लिख आते हैं—

(१) धर्म के लिये न लिखा । यदि धर्म के लिये लिखते तो धर्म भी न विभाग और गुरुगुरुगुरुता का अच्छी न होगा । रचना अच्छी होने पर धर्म प्राप्त हो प्राप्त होगा ।

(२) धर्म के लिये न लिखा । धर्म में इस समय कनेक ऐसे लेखक हैं जो धर्म के लिये लिखते हैं, उन्हें धर्म लिखते भी है

(१) जिस विषय में जिस की गति नहीं है उस विषय में उसे हाथ न डालना चाहिए। यह एक सोधी बात है। पर सामयिक साहित्य में इस नियम की रक्षा नहीं होती।

(३) अपनी विद्या या विद्वत्ता दिखाने की चेष्टा मत करो। यदि विद्या हता है तो यह लख में भाव हो प्रकट हो जाती है, चेष्टा नहीं करो पढ़ो। भाषा कल क मलों में अंगरेजी संस्कृत आदि भाषाओं के उद्धरण एवं प्रयोग बहुत दिखाया करते हैं। जो भाषा अपने की नहीं माझूम उस भाषा के किसी वाक्य या अर्थ का अन्य प्रयोगों का सहायता में कभी न उद्धृत करो।

(२) सब कलकारों में धेनु कलकार सरलता है। जो सरल शब्दों में सहज रीति में पाठकों का अपने मन के भाव समझा सकते हैं वे ही धेनु लख है क्योंकि लिखने का उद्देश्य पाठकों को समझाना है।

(१) जिस बात का प्रयोग न हो उसे मत लिखो। प्रयोगों के प्रयोग को यद्यपि सब समय आवश्यकता नहीं होती तथापि प्रयोगों का ज्ञान रखना आवश्यक है।

लिखते समय इन बातों का ध्यान रख कर लिखने से साहित्य की अच्छी सेवा की जा सकती है।

कठिन शब्दों के अर्थ।

विषय-संग मुक्त स्थिति का में लिखा हुआ रचना। स्थान-अर्थ।
 मूल-अर्थ। सत्य-बहुल भाव। सत्य-अर्थ। वह सब समय वह
 वह वाक्य दाह। विषय-बहुल वह वह लिखा हुआ रचना।
 मूल-अर्थ। कठिन-अर्थ। सत्य-अर्थ। सत्य-अर्थ।

चूहेदानी

ने चूहेदानी आश्य देता हागो । इसका इत पिनदे
ता है । इगके अ इर चाग का लक लपलाता हाता है
राग का टुकड़ा ता म लपका रगता है । गुग आरने
हजा उसकार हा का गुग म लपम है और वह
न्दर गया । रादा को मु तगा । आर पिनटका सगका
रगता बड़ हुआ और वह गगन म हा गया । मव
क लम से घ मन्दर गया था वहा मका गुरा
रि वह यार आन के लिए तडगता है । इसा प्रकार
तका के लिए भा अनक क म वह हुए है पिन म
केम डान है और अन म उनम निगजना उनके
हा जाना है । वाग का मर करन गय किता मित्र न
क तिगरट पित्रा "अलम म करने पर वहा— 'अवी
वेकृण हा इगम न पान को घम रगा है । वर हा
देता किता मगा है—वहा को दलना थाउ हा है

वस आये करने में । धर धरे सिगर पान की आदत पड़ गई । अब मैंने कहा स आर्थे नृदयान कर किताब कापी, खान पाने या किसी दान स माना आदि स पेस लिए । दो चार दिन इस तरह चला । धर धर चारा की आदत रहा । वस अब पित्रद में पैस गये । निकलना चाहते हैं निकल ही सकन । इसी तरह चूरन खाने का गान विदेहर दसन का जल आपस में माली बकने का पान रगिचार और घुर काश का आर रधि यह सब इस नृदेदानी म फस जान क फल है ।

मदली पकड़न काग पक जग्गो जकड़ा सता है उसमें रस्मी पाप दता है रस्मी क सिगार लाद का आकड़ी में आग जगान है और फिर उस पाना म डुग दता है । मदला पानी में देखता है आद क पास आता है नृ हा डरो दगदर पाद ह जता है किनु जलच वग फिर आता ह दा तान पार दसा हो करता ह तग आग खान क जिव मुह साजता है और लाहे की आकड़ी में पैस आता है । इसी प्रकार ससार की घुरा आदतें हैं । पहले लग डरत डरन आरम करत है—“कहो बाबूग न देखें बरो माग नखन, कहो मास्टर मादवन देखें।” घोर धर आदत पड़ आत ह और फिर निरिज हावन प्रकाश्य हर में पाग करन लगता है । रग को का चादिय कि मयदा साग-पान रहे । घुर निबो मे पड़े । यह पाद रसे कि चारों तरफ पित्रद है और उनस वचन का सदा पान कात रहे ।



(१)

पुगल अन्तर्गत का अधिष्ठाता मन्त्रि जान पहचान है और मन्त्रि पुगल अधिष्ठाता । पन्तु उ मन्त्रि है वह मन्त्रि मन्त्रि ही नहीं होता । इसलिये हिन्दी कागज का विना विना अधिष्ठाता न कर सके पाएँगे । समस्त कागज है अन्तर्गत अधिष्ठाता है अन्तर्गत अधिष्ठाता है किन्तु पुगल पुगल का मन्त्रि एकसा बनाने समस्त क्या उचित है ?

(२)

साधारण अन्तर्गत अधिष्ठाता मन्त्रि इसलिये है जैसे रागा शास्त्र का मन्त्रि मन्त्रि । वह मन्त्रि यह नहीं जानता कि वह मन्त्रि ही उनका भावा मुमन्त्रि अन्तर्गत का अधिष्ठाता होगा । बुद्धिमान् मन्त्रि अधिष्ठाता का अधिष्ठाता बुद्धि की कसौटी पर कस कर मन्त्रि अधिष्ठाता मन्त्रि है ।

(३)

हम किन्तु नया और किन्तु पुगल कहें ? समस्त अधिष्ठाता है जो अधिष्ठाता है वह अधिष्ठाता मा रहा होगा और आ नया है वह नया अधिष्ठाता है अधिष्ठाता । मन्त्रि अधिष्ठाता अधिष्ठाता और अधिष्ठाता का कान्ति बुद्धिमान् हय और अधिष्ठाता का कसौटी बनाना ? ।

(४)

हिन्दी कागज का जान मन्त्रि स ही हमारा कसौटी की इतिहास नहीं है अन्तर्गत अधिष्ठाता उसका अधिष्ठाता करने का भार अधिष्ठाता मन्त्रि

हानी चाहिए । राग जान लने से ही रागी नीराग नहीं हो सकता । औषध सेवन की भी आवश्यकता है । इसी लिये प्रभु ने कहा है—
 "ज्ञान त्रियाभ्याम् मास" (अर्थात् ज्ञान और भदनुकूल चारित्र्य से मुक्ति मिलती है) ।

(८)

आयुष्काल परिमित है । उसे सफल बनाने के लिये बहुत समय और परिश्रम की आवश्यकता है । शीघ्रता करा, फिर पछताया न रह जाय ।

(९)

जब से तुम जन्मे हो तभी से तुम्हारा जीवन प्रतिक्षण कर्म होता जाता है । तुम्हें माश्रूम दे'ता मन जगाकर कष्टायनालन में लग जाओ ।

कठिन शब्दों के अर्थ

उमल-बदल । निरन्तर-उपलब्ध । पुण्यायकाग-उत्पन्न । बन्नी-कृत्रिम । अल्प-थोड़े इत्यादि का । किं रक्त पय मडा गला मांस निकालने के लिये अश्व में डब चीला । अश-नीन-नीनता । इय-न्याय करने हेतु । उतावय-लग्न करी प्रण करने हेतु । इन्ध्री-मन समानि । अस्मदिवन-अभिधान ।

पाठ ९ वॉ ।

हिलनी हुई दीवार

पञ्जाब में गुल्दासपुर नामक एक स्थान है । वहाँ बपानियों का गुल्दारा है । वहाँ महन्त दीपबन्दा का पुत्र महन्त नारायण दासजी बड़े करामाती हुए हैं । उनकी करामातों का विकास बचपन से ही हो चला था । इस बच की अवस्था में ही आपने ऐसा बड़ी करामात दिखायी कि जिसका समझा-कायनाक भी सबक देखने में आता है ।

इस महाना का पिता महन्त दीपबन्दाजी एक मजदूर रहने बसते रहे थे जिस का कारागरो ने अन्याय साथ-साथ और परि-भन से एक सुरङ्ग दीवार उखाड़ा जो ऊपर जिसका उनकी बड़ा घनपट था । एक दिन नारायणदासजी खेलने खेलने उधर जा निकले तो कारागरो ने कहा—“दादाजी, हमने यही पट्टी दीवार बनायी है कि यदि हाथी ना टकराए तो न हिले ।

य हाट दादाजी का बच्चा खिजाया य और खेलते खेलते का अद्भुत करामात दिखादना इनके बच्चे हाथ का खेल था । कारा-गरो की बच्चा बान सुनकर बड़ा गप और उस पट्टी दीवार पर अपना पात्र रखकर खिजाया तो वह भी हिलने लगा । इसका दखान् अन्तर्गत के साथ कारागरो का आरंभ करके कहा कि इसी बच्चा का हिलता है कहीं इस गिर न गड़े । कारागरो तथा और लोग इस बच्चा का देखकर चकित रह गये । महन्त दीपबन्दा ने कारागरो से कहा कि इसका यही ही करने का इस पर कत

मत डाला अथवा वह भी हिजन लगना और लाग रहा आने में भी डरेंगे ।

यह दीवार अथ तक घेमा हा हिजता है और इसी से उमे भूतना महत कहत है । बड़े बड़े दगा कारीगर और तिलायता ईजानियर उसका हिला हिताकर देखा है और हरात हात है । किमी को समझ म नहा आता कि क्या भेद है और क्या खून पथर की बना हुइ उडा समीन दीवार २०० वर्ष स हिताता है । यह ९ स्तर्भा पर खडा है जिसम ९ द्वाजे हैं । पञ्जाब भर म यह बात महत नारायणदासचा की बालकाहा हा माना जाना है ।



पाठ १० वाँ ।

कर्म और पुण्यार्थ का आगम

एक भित्तारी ने चारमेवक के द्वार पर आवाज देकर कहा—
‘है काइ माइ का जान करगा माधु का सजान पूरा । भित्तारी की बात सुनत हो वीरमेवक बात-सगभ उलुखना म द्वार का आर गया ता देगता क्या है कि मग्नि यज्ञ म एक नयपुवक भडा है । शरार पर पूरा धम्भ नहीं है । भित्तारी ने चारमेवक का आर आतापूर्ण नेत्रा मे दखार कहा— बाबा सुत्का मर आता मित ता खाता प्रसन्न हा जाय । बहन भूखा है ।’

वीर०—तुम ता बलिष्ठ माधूम जान हा फिर इस प्रकार डारें क्या खात फिरत हा । कुछ काम करा ।

भिन्नारा—बालू काम क्या कर कुछ जानता नहीं इसर म
में नहीं। माता पिता काई रदा नहीं दान बाजक हू।
गुरुजी मर आगे मिल जाय।

घार०—म तुम स दाया हू और चौकी बसा म पता हू। तु न
रिजतु न नहीं पता। एक दिन गुप्ता कहत य—
यहा पटू साई छै पिता नहि जहि पास।

भिन्नारा—दरम दान न सम सग र परायो आस ॥

घारसयक न रिम्मित हारर पूदा— अर। तु कहता है मर
लिये वाला अर भैस बगाय है। फिर तुम यह दादा कैसे
याद है ?

भिन्नारा०—बालू। बचपन म बहुत पन्न किया। गुप्ता का सग की
पर मर भाग्य म दिया न लिया था न आई न आई।
गुप्ता न मा अनुग्रह काफ मुम पदान म बहुत परि
धम किया पर म पद न पाया। गुप्ता अब समझते
ता यहा दादा बलन रभीस मुम यह याद रह गया।

घार०—तुन परिधम किया ता गुप्ता मा परिधम किया फिर
मा तु न पद मका यह कदावि नहीं हा सकता। आखिर
म मा ता आदमा हू म कैसे पड़ता हू मर सय साधा
कैसे पड़त है? हम लोग दयता ता नहीं है? यहाँ म करक
अपना मतलब गाटना चाहता है। चत हट यहा स।

घारसयक का माता न उस भिन्नारा का निरस्वार करने
नसकर भिन्नारा का मान्यता और कुछ अर दकर पिदा किया।
फिर यह घारसयक का समझाने लगी— यग। गृहागत अतिथि
का कभी अनादर न करना चाहिर। एक दुसा अथ आशा के

प्रकाश स तुम्हार द्वार पर आय और तुम उस नैराश्रय के अघकूप में डक जवा ना उसे उतना ही दुःख होता है जितना किसान की छाती में छुरा मार देना है। कोई विधवा स्त्री अपने इकलौत बेटे से मिलने जाती है और वह पहा पदुचकर सुन कि उसका दहाशयान हो गया है ना उस जैसा मार्मिक बदना होती है, ऐसी ही बदना नकार भर तिरस्कार से भित्तारी का होती है। अतः उस निराश्रय न करा। कहा भा है—

मव स पहन व मुय जा बहु मागन नार्हि ।

उनत पड़त व मुय, जिन मुख निरसत नार्हि ॥

हा तुम यह कैसे कह सकते हो कि वह भूठ बालता था ।

धार०—यह कहना था कि मर मुठ न पना परिधम क्रिया में है बहुत मायाशया का पर पद न सका। यह कैसे मय हो सकता है? मैं न पना है कि जा परिधम करता है साफ जना उसका दामा हो जाती है। परिधमा का कोई कार्य असाध्य नहीं होता। मा! उमन परिधम क्रिया होता त अमर्य वन निम्न जाना ।

माता—बेटा! मू न जा पना ह यह मय है परन्तु तुम उसका रहस्य जान नहीं दुमा। बात यह है कि ज्ञा स ज्ञा और वन स बहु काय क सम्पन्न व निय परिधम के आवश्यकता है परन्तु कवन परिधम न हो कार्य में सफल जना नहीं मिलता। उस दलन के लिए नत्र का अनि वाय आवश्यकता है उमक रिता कोई कुछ नहीं देन सकता, किन्तु नेत्र हान पर या आनन पुरार नहीं देन सकता ।

श्रीर०—मुझ गलार में दखने की गक्ति नहीं रहती ।

माता—हा जैसे नेत्र दखत है पर उनक लिये किमा दूसरी गक्ति का भी आवश्यकता होता है । वैसे ही सफलता परिधम करने से मिलती है, परन्तु किसी दूसरी गक्ति की भी जरूरत होती है । वह गक्ति कम है जिसे हाग मान्य कहा करने है । उक्त कर्म परिधम क अनुकूल होता है तभी हमें सफलता प्राप्त होता है । दस्ता बानगल और माह-नजाल दोनों साथ साथ पढ़त थे । उनमें माहनजाल परीक्षा के समय अस्वस्थ हो गया । यह कर्म का माहा-म्य है अन्यथा वह भी उत्तम हो जाता । उसने क्या कम धन किया था ?

श्रीर०—मा तुम कहता हा कम का मान्य कहत है परमने पढ़ा है कि 'कम काय या काय का कहत है ।

माता—वेग ! एक गन्ध क अनक अर्थ जान है । उन धन और साहित्य में 'कम गन्ध का उपयोग प्रायः मान्य क अर्थ में होता है । बनाया जाल गन्ध का क्या अर्थ है ?

श्रीर०—एक तरह का रंग होता है ।

माता—श्रीर कुछ ता नहीं जाना 'उडा जाल आखी का खाला' यहा ज्ञान का क्या अर्थ है ?

श्रीर०—प्यारा पुत्र ।

माता—मा ज्ञान गन्ध का हा अर्थ हुए । इसी तरह कर्म गन्ध का भी अनक अर्थ है । उनमें से एक मान्य भी है । समस्त है भिक्षारी में विद्याभ्यसन में परिधन किया हा पर कर्म

करते रहाना ता कर्म का अनुकूल अवस्था प्राप्त हो
 काय सिद्ध हो जायगा । यदि तुम भय के
 भावम निश्चे हो पैठ राग और हाथ पैर न हिला
 आन ता मरझता नहीं दिन सकना । समय है
 किसी समय कर्म की अवस्था काय-मिद्धि क अनुकूल
 हो पर तुम्हारे निमित्त रूठ रहन म यह अनुकूल अव
 स्था भा दा हो निश्चल पाय । ता तुम हाथ मलने रह
 आधाग । तुम यह नहीं जान सकन कि किस समय
 कर्म की अनुकूल अवस्था हागा ? इस लिय काय सिद्ध
 होन नहि कयाय उपाय करन जाना चाहिये । एक बार
 की असहजता म होता न होकर बराबर प्रयत्न करन
 जान की सफलता नही हो जाती है । समझ ?

धोरो—हा मा ! समय गा कि सफलता प्रयत्न म मिलती है
 किनु उमक गिय कर्म का अनुकूलता जानी चाहिये ।
 अनप्य अपन काय का मिद्धि क लिय सदैव दस्त करने
 रहना चाहिये । हा एक बात पून का रह गया । तुमन
 कहा था कि कम आठ प्रकार क होत हैं । यकीनकीन है ?

माता—वेग क निम्नलिखित आठ बर है—

- (१) ज्ञानावगम—ज्ञा ज्ञाना क ज्ञान का टके ।
- (२) ज्ञानावगम—जिम क कारण ज्ञाना का दानमुख
 छिजाय ।
- (३) वेदनाय—ज्ञा सामासिक मुख दु ख का भाग कराव ।
- (४) माहनाय—ज्ञा ज्ञाना क चारिष और मयक्य का
 जिगाइ ।

- (१) आयु—जा किसी शरीर में आत्मा का राक्ष रक्खे ।
 (२) नाम—जा शरीर की अच्छी बुरी रचना कर ।
 (३) गात्र—जिसमें उस नाडकुल का भक्ष माय उत्पन्न हो ।
 (४) अनराय—जा लाभ भोग उपभोग, दान और
 आत्मा के बज में विघ्न उपस्थित कर ।



कठिन शरीरों के अर्थ ।

विश्विन—आत्मार्थ में गुण । बाला अन्तर भोग काक्ष—अन्तर का क्षान
 व क्षाना । गदागल—अ आत्मा दुष्ट । अतिथि—मेहमात्र । उपायमान—सुख्य ।
 अनाथि—जा गुण न हो गत ।



पाठ ११ वॉ

सुख का पथ

(युव न के अस्मिन् तत्त्वज्ञानो महात्मा जिन तम के उपदेश)

१—'मेरा आ इच्छा है वही हो ' इस प्रकार आकांक्षा न करके
 यदि तुम ऐसा विचार करा कि 'चाह जिस प्रकार की
 प्यारा हो, मैं उसे प्रत्यक्षादुत्तर प्रदण करूँगा ' तो तुम
 सुखी हो ।

२—राग शरीर की हो बाधा है वह आत्मा की बाधा नहीं है ।
 यदि उसमें आत्मा की सम्मति हो तो वह आत्मा की बाधा

हानी है। स्मरण पाव की हो बाधा है, आत्मा की नहीं।
जा बुद्ध भा क्या न हा तुम सब व्यवसायोंमें हा कह सकन
हा कि एह बाधा मत नदी, किना दूसर की बाधा है।

३—तब कोन तुम्हारा अपादन करता है—कोन तुम्हें बन् दता
है? तुम्हारा अज्ञानता हो तुम्हारा अपादन करता है—तुम्हें
बन् दता है। अब हम जग बन्धु-बाधन म सुख-सम्यक्
मे अन्तर्गत होत है तब अपनी अज्ञानता हा हम लोगों का
अपादन करता है। दाई (घात्री) अब घाड़ी नर के लिये
बन्धु क पास म घनी आती है तब बधा राज जगता है
किन्तु फिर या हा उस घाड़ी मिगाई हा आती है त्यों ही
यह उसका दुःख भूत आता है। तुम भी क्या उसी बन्धु
की तरह होना चाहत हा?

हम जिस में घाड़ी सा मिठाई पर भूज न जाय हम जिस में
यथाथ ज्ञान द्वारा विमुक्त भाव द्वारा परिचालित हो, इसका
ध्यान रखना चाहिये। यह यथाथ ज्ञान क्या है?

मनुष्य का यह समझना चाहिये। क्या बन्धु—बाधन क्या
पर मर्षांश यह सब बुद्ध भा अन्तर्गत नहीं है—सभा दूसर की
छोने है। अन्तर्गत गौर भी अन्तर्गत नहीं समझना। धर्म के नियम का
सदा समझ कर अपनी म सों के सामन रखना। यह धर्म का
नियम क्या है? यह यही है कि जा बुद्ध वास्तव में अन्तर्गत है
उसे ही चिरन्तर धरना दूसर की ध्यान पर दावा न करना। जा
तुम्हें दिया गया है, उसका व्यवहार करना जा तुम्हें नहीं दिया
गया है, उसका त्याग न करना। जा तुमसे वापस ल लिया
जाय, उसे तुम इच्छापूर्वक सहन न हा छोड़ देना और चिन्ते

अब यह सम्झना बहुत आसान है कि डच लोग इन दीवारों की रक्षा तब मन धन से क्यों करते हैं। व जानते हैं कि उनका घर उनका लाइल रहने समुद्र की मँज्र है। जायदा यदि इन दीवारों की रक्षा न की जायगी।

बहुत दिन हुए कि एक डच बालक पीटर अपने घर के बाग में खेल रहा था। उसका माता ने घर के अन्दर से आयाज दी और कहा— 'पीटर' आआ अपनी दादी के लिये यह पनार दाना का इम्प्य ल आआ। दादा इसे मने बड़ी मेहनत से बनाया है। इसे लेकर सीधे दादी के घर आआ। रात में मलना नहीं और

✓ पीटर स्नोट आना ताकि तुम अपने पिता के साथ नाम का भाजन कर सका।

पीटर ने पनार के दान इन्ध के लिये और अपनी दादी के घर का आर चला। रात में उसने कहा अपनी समय मल करू में नष्ट नहीं किया, न फूल ही सुन। यह माथा अपने मार्ग पर चला गया और अपनी माता के आआ के अनुसार दादी के घर पहुँचकर पनार का दान उसका दान किया। इन में अपना हाँ सुका था।

अपनी दादा से सुहा लेकर यह फिर घर का आर सौग। इस रात में जोड़ना था, समुद्र दीवार उसका पास है थी। उसने और दादा अस्थायी पिता से कई बार सुना था कि मेरुको दाना मनुष्यों के पशुधर्म द्वारा समुद्र दीवारों से पार हुई है और दान का आवन इन का रक्षा पर निर्भर है।

हे 'यह क्या' उन सुनसान अंधकार में यह रूप यह उसका बाज में पड़ा। यह चौक आ दाहर सुनने लगा उसको दाता भव-कने लगी।

वटिन गद्दों के साथ

मौली मास दस मय के मय । इन्होंने इन्हें उन्हाई न
हो । उन्हाई का मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय

पाठ १३ वॉ ।

सर्गापि महीन

दुख हा दुखार्थ करा उगा ।
दुख करा दुखार्थ दुखा न का
दुख का मय दुखार्थ करा ।
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा
दुख का तुमने दुखार्थ हा

मिथ सुद्धे यदि माम माय है ।
 यदि बुद्ध गवता मित्र माम है
 जगत् म करमा बुद्ध काम है ।
 मनुजी ता धर्म ते न इरा उठा
 पुराय हा पुरायथ करा उठा ॥३॥
 प्रवट निव करा दुग्गाथ का
 हरय म तज हा सब वथाथ का ।
 यदि बही मुमन परमाथ हा
 यह विमर्षा नद दुगाथ हा ।
 मरव हा या दुग्ग हा उठा
 पुण्य हा पुण्यथ करा उठा ॥४॥



बहिन मादो के काम

मादो - मादो दूध दूध मरवा । इतना दुग्ग मित्र काम ।
 बहिन मादो न मरवा । यदि व - व दूध व । मित्र-
 मा । व दूध व व मादो व दूध व दूध व । ॥५॥
 मादो । मित्रमादो । उठा व व व व ।



पाठ १४ वा

उपक्रम

मादोको व मित्रमादो म करमादोका बही परमाथ का
 मादोका दूध मित्र मित्रमादोका व दूध व दूध व दूध व

परन्तु इनमें जो आध्यात्मिक विचिन्ताएँ हैं उनमें रागा में
उनका स्थान नहीं होता जिनका आध्यात्मिक विचिन्ता में होता
है। उदाहरण-विचिन्ता अर्थात् उदाहरण द्वारा रागों का दूर
करना आध्यात्मिक विचिन्ता है। परन्तु भी जब यन्त्रों का ज्ञान
है तो स्वयं स्वाना बहू कल्पन है। यह आध्यात्मिक विचिन्ता के लिए
लाभदायक है।

यान सिद्धि को वह से परम्पर विद्यमानता क्या होती है ?
जहाँ सौ आग पर यदि एकदम पर का दर कायदा लाद
दिया जाय तो वह दुष्कृत जायगा। यही हाल सब कायदा
निकाय लन पर भी होता है। इस प्रकार आध्यात्मिकता से
अधिक आध्यात्मिक ज्ञान से जो का अर्थ में ही जाना है
और यान सिद्धि का ज्ञान से परम्पर विद्यमानता जानाती है।
परन्तु रागों का ज्ञान से जाना है। ज्ञान से ज्ञान समझना
है कि ज्ञान का ज्ञान कि लिए भावन किया जाता है
जिनमें ही अधिक भावन का ही ज्ञान अर्थ का साधन समझना
है परन्तु यथा ज्ञान प्राप्त होता है। इसी ज्ञान विद्यमानों के
कारण मनुष्य आध्यात्मिकता से अधिक स्वच्छता है और जो
ही अन्तिम बहू ज्ञान से ज्ञान इत्यादि ज्ञान का ज्ञान ही
जाने हैं। आध्यात्मिकता के परन्तु ज्ञान मनुष्यता में से अधिकज्ञान
का ज्ञान में ही विद्यमान होता है। इसका कारण यही है
कि ये मनुष्य के ज्ञान ज्ञान बहू ज्ञान का ज्ञान ही
जिनमें उनका परन्तु ज्ञान का ज्ञान ही होता है।

अधिकज्ञान ज्ञान का कारण ज्ञान ज्ञान का ज्ञान है।
इसे दूर ज्ञान के ज्ञान ज्ञान ज्ञान है परन्तु ज्ञान पर
मनुष्य—ज्ञान ज्ञान ज्ञान ही ज्ञान से ज्ञान ज्ञान ज्ञान

के अनेक परीक्षा-स्थान स्थापित हो गये हैं। इन परीक्षा-स्थानों से देश को क्या लाभ हुआ है यह कहना तो कठिन है पर जो हानियाँ हुई हैं वे स्पष्ट हैं। पुरातन भारत में जैसे पारङ्गत विद्वान् हाथ गये हैं वैसे आनन्द कहें हैं। इस प्रकार के कारणों में एक आनन्द के विद्यार्थियों का परीक्षा में उत्तीर्ण होकर उपाधि लेने का आदम है। आनन्द प्रतिगत दो ही चार विद्यार्थी एवं मित्रों का आनन्द के लिए शिक्षा ग्रहण करने हैं। जब सबका उद्देश्य उपाधि-प्राप्त और नौकरियों के पद प्राप्त होना है। उपाधि-प्राप्त के इस प्रति आनन्द न आनन्द प्राप्ति का वास्तविक लक्ष्य नष्ट कर दिया है। जिसमें शिक्षा में एक प्रकार की कृत्रिमता आ गयी है।

अपना योग्यता और आनन्द के माप का अनुमान करने के लिए ही परीक्षा होना चाहिये क्योंकि यही उसका तात्पर्य है। इस दृष्टि में भी परीक्षा का प्रयोग में परीक्षा सुधार करने की आवश्यकता है। आनन्द प्राप्ति एवं उदाहरण मिलते हैं कि जिन विद्यार्थियों का योग्यता अधिक होता है वे अनुत्तीर्ण हो जाते हैं और कमतर लक्ष्य प्राप्त हो जाते हैं। कभी कभी तो ऐसे विद्यार्थी भी प्राप्त हो जाते हैं जिनका अनुसंधान होने की पूरा सम्भावना रहती है और अन्तर्गत पठ्य पुस्तकों का अध्ययन भी नहीं किया जाता।

विद्यार्थियों का निश्चित उत्तर देने का शिक्षा का मुख्य अन्तर्गत प्रश्न चाहिये। बहुतों विद्यार्थियों का अनुत्तीर्ण होना का कारण यह भी है कि उन्हें उत्तर तो पढ़ा जाने है पर उन्हें कम लिखना चाहिये यह नहीं जानते। जितने ही परीक्षा-स्थान में प्रवेश करते हो प्रवेश पाते हैं। परीक्षा-स्थानों का अपने अन्तर्-

न रक्ता । किन्तु ही भारतीय लड़के वहाँ परीक्षाओं में अग्रण
निरालों का दायित्व बड़ा जान है मुझ ऐसा मय न करा ।
यदि तुम दाप न दगा या तुम नकल न कराग ता य तुम्हारा
कुद नहीं बिगाड सका । परीक्षालय म यदि तुम्हें पानी पाने
लगाका करन अथवा अन्य किसी बात की आवश्यकता पड़े तो
नुरत अपनी जगह पर पड ह। जाओ । टहलता हुआ निरीसक
तुम्हारे पास आकर स्वय पूछगा और उचित प्रयत्न कर दगा ।
शार न करा ।

इन सब बातों पर ध्यान दन से परीक्षार्थी का उत्तीर्ण होना
एक प्रकार से निश्चित है ।



वर्णि शब्दों के अर्थ ।

पुनः पुनः । १ - १०० । पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः ।
पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः ।
पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः । पुनः पुनः ।



मछ नावा प्रकार को पोछाओं में विनम्रता है। जिस अन्ति सब का मन्त्र कर दोगे है वैस हा ससार क विषय-भोग लोगों का विनाश कर दूँगे है। अन्ति में यो यो दो और इधन पड़ता है यह अधिकाधिक प्रानित होता जाता है। ससार में भा यो यो तीव्र मरिना रूप दो और विषय का इधन पड़ता है, यह बन्ता जाता है।

()

ससार का संसार इन्ही अर्थकार मद्रा जाता है। उस अर्थ-कार में ससार में सार का मान हा जाता है वैस हा ससार में मन्त्र अन्तर और अन्तर सब मद्रा होता है। जिस मन्त्र अर्थकार में इधर उधर मन्त्रकार पद भूत जाता है। यस हो सग ससार में अन्तर अन्तर मन्त्र और उन्ही मन्त्रकार अन्ति भागने विरत है। अर्थकार में सार और काय मन्त्रकार दासन है और दासों में और सार है इसका निषय नहीं होता। वैस हा ससार में भी विषय और अर्थकार के पदवन्त नहीं होता। जिस अर्थकार में अन्तर क हात हुए भा अन्तर क पा हा जाता है उसी अर्थकार ससार में बुद्धि और अन्ति सार हुए भी अन्तर मन्त्रकार और अन्तर है।

(४)

ससार का सार उन्ही अर्थकार के अर्थकार है। जिस अर्थकार अन्तर अन्तर मन्त्रकार है वैस हा उन्ही भा ससार में अन्तर सार मन्त्रकार है। जिस अन्तर का अर्थकार मन्त्रकार हुए भा अन्तर अन्तर

इन उपजाओ में सगार के मर जाँर उनक निगरम के
उपाय बनावे गये हैं। इन्हें मनन कर सुगता का सम्मेलन पाठिए।



कठिन मन्त्रों का अर्थ

नमो भगवते वासुदेवाय । १५५ । १५६ । १५७ । १५८ । १५९ । १६० । १६१ । १६२ । १६३ । १६४ । १६५ । १६६ । १६७ । १६८ । १६९ । १७० । १७१ । १७२ । १७३ । १७४ । १७५ । १७६ । १७७ । १७८ । १७९ । १८० । १८१ । १८२ । १८३ । १८४ । १८५ । १८६ । १८७ । १८८ । १८९ । १९० । १९१ । १९२ । १९३ । १९४ । १९५ । १९६ । १९७ । १९८ । १९९ । २०० ।



पाठ १७ वाँ

धर्मधोर कामदेव

भगवान् महाशार के समय ज्ञान का चपा नगरी में कामदेव
जान के एक धातक हो गये हैं। उनकी पत्नी का नाम भद्रा था।
भद्रा बड़ा सुन्दर थी। वह परमा सुन्दर थी। कामदेव का
हिमाघात का बला न था। द्रव्य का तो सामान्य नहीं था।
करोड़ मुहों पर म ह करोड़ यथारम ह करोड़ आपदा ह म
और मन्त्रों का कारण में था। ध्यान करने इस प्रकार मुरार यथस्था
कौन करना ह ? निरक पास घन है यद्यपि विचारक साथ
अनेक पूर्ण पुरणी के आचार में नि ॥ महान् पर यथस्था कर
ता आचर दिन निरकन वान रिमान यद्वा आय। पर हम तो
पृथ्वी का धातु का भूल हुए हैं।

यदि हम धारकधन से वंचित रहें तो अनाम हो हैं । ह भदे' न मी प्रभु से धारिकाधन स्वीकार करके हनय होजा । पसा करमर बारबार नहीं आना । नडा अन्यन प्रमत्त हु और मात्र ही धारिका हा गग ।

कामदेव का अन्ता पना म कमा म्यत्तु म्मह था । इसका आनाम इम घना म मिता है । वामन में उस समय का दापन्य मयध आतकत्र का तरु तुत्तु वामनामों की छदिक सुमि क लिय न । हाता था । गरन धम क सब अगो का पालन करन क लिय हाता था ।

इम प्रकार धारकधन का पान्न करन हुए कामदेव ने धौदु धय रिता दिद । पर तिन उमम धारक का म्यारह प्रति माओं क पान्न करने का रिताय दिदा और अपन मधु बाधवों का भउन आति उचित सन्तारा म मजन करक उनही आजा ल देदुव का धर का मार काय सौपकर म्यारह प्रतिमा (पटिमा) करना म्यारि का ।

वच कामदेव गन में वारमग म गद हाकर धनन्य हा रह घ ना वक म्मल्लिय का अर्जति पनधर उनक पास आया और बाजा—म दावी कामदेव टोंग रखकर सोयी का टगन पडा है । न मग बाजाहा म्मष आवाता है । इस वगुजा मलि मे न म्मय और सुमि का कामना करना है 'मुक' करना मजा पदता है ना पद दो टाईद अन्यया नग हदिया पूर < कर हुगा । अब कामदेव इन मयक शक्या मे तनिक मा दिव

हम लोगों में धर्म और कर्त्तव्य के लिये अपने शारीरिक सज्जित सुखों का बलिदान करने की शक्ति भावे यही प्राप्यता है।



कठिन शब्दों का अर्थ

[illegible]

पाठ १= वाँ

व्यवसाय चतुष्क

(मनवैदा इन्स्टीट्यूट)

कई सुर गाया है कई ता बसावन है

कह लो दत्तायत है माहे दिगो सारके ।

अन्या उनके लक्ष्यों का नहीं जानता। इसका अतिरिक्त कुछ शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति व्यक्तिगत मामलों के लिए अथवा अथवा अन्या पर अन्या राय गाने के लिए अन्या का नये नियमों में मड़का दूत है। इसालिये आरथ ज परमान स्थिति में मध्याह्निक दे उन्हें हाइना भी कहिन हा रहा है।

सामाजिक व्यवस्था के द्वारा प्रतिपादित धार्मिक सिद्धान्त नहीं हैं जिनमें परिवर्तन की गुणाएँ न हा। समाज के मताओं द्वारा मन्त्र का सुविधा का दम्बर चलाया गया है। समाज के मता न तो मन्त्र ध न उहोन इन मताओं का सदा के लिए चलाया था। उहोन समय तथा परिस्थिति के अनुसार इनमें परिवर्तन करतन का हक काहा हा है। अब ये नियम बने ता उनको अकरत यी इसी परिस्थिति था। अब अब समाज का परिस्थिति बदल गयी है नियम मा बदल जाने चाहिए। पहले लोगों के पास अतिरिक्त धन था काउकल अतिरिक्त दत्तित हा अब यदि रहत की माति काउकल व्याह में धन धन करन की म्या कापन रखा अथ ता चाह करन एक काउकल हाहाय। नियम समाज की सुविधा के लिए बनाय जान है इसलिये नियम समाज के लिए है समाज नियम के लिए नहीं है। समाज और नियम इन दोनों में समाज हा बहा दस्तु है अनपय समाज का रक्षा, बर्धन और सुविधा के लिए उसका नियम बदल जा सकने है। बेहतर नियमों की रक्षा के लिए समाज का कहिन हा मागने की काह काउकल हा नहीं है।

समाज के मताओं को मान्यता हात है। उन्हें धार्मिक कह नहीं जाना अथवा समय है उन्हें नियमों में परिवर्तन करने

ता हूँ रहा उसमें कुछना आजाता है। इस दृष्टि में प्राचीनता की रक्षा के लिए भा नियमों और प्रथाओं में परिवर्तन करना आवश्यक है और उन स्थापन करना ही है न मलीभातिपरि वर्तन करके उन्हें समान का वर्तमान अवस्था के अनुसार कल्याण द्वारा बनाना ही उचित है। तात्पर्य यह है कि अतएव वर्तमान रानि राजा का मली भाति स्थापन नहीं किया जाना तब तक उनमें समाज का उपकार नहीं हो सकता।

जैसे प्राचीनता प्रिय रानि हूँ धर्म काई का नवीनता प्रिय भी हान है। ये सब नियमों का पुराना और मली हुआ कह कर उनका नस्तना किया करने है। ऐसा करना भा उसी प्रकार का भ्रम है जैसा मर नरान नियमों का भनना करना अतएव प्रत्येक पुरान नियम का पालन समझना भा भूल है। हमारे समाज में अतएव ऐसा करने है आ पुराना बातों में मिलना चुनता है। उसी वजह से यदि वर्तमान समाज का ज्ञान हो तो उनमें परिवर्तन करने का काम आसानी से नहीं है। हम पुरान नियमों का जगह नये नियमों का आस्थापना करना चाहते हैं यह इसलिए नहीं कि पुरान नियम खराब हैं बल्कि इसलिए कि यदि किसी समय में समाज के लिए उपयोगी वह होगे परन्तु समाज का वर्तमान स्थिति में वे उसकी त्रिप लाभापद हान का जगह उत्तर हानिदाय हो रहे हैं। आ नियम आ प्रथा, आ कर्तव्य और आ मित्रता न समाज की वर्तमान स्थिति में एक त्रिप कल्याण कर हो सकें उन्हें अन्त्य नना और नका प्रचार करना—चाह वे नये हो या पुरान—प्रत्येक समाजहितैशी का कर्तव्य है।

मनन में हान वाला हानिवा हामी परन्तु यह धारणा
ज्ञान विचार पर अत्यन्त है। ससार में कोई वसी वस्तु
नहीं जिसका विचार न किया। स्व में दुःखवाग न होता है।
इसमें उन वस्तुओं का हा नष्ट कर देना क्या उचित है? कुछ लाभ
गाह या करक गावों का दुःखवाग करने है। इस में गावरा का ही
नाश कर दिया जाय। यमा का विचारमान व्यक्ति नहीं कहस
कता। कुछ लोगों ने यदि 'मरु' या धम का दुःखवाग किया है तो
इस में धम का हा लाभ कर देना उचित नहीं। यमा कर्म वाञ्छ
ना उसका दुःखवाग करने वालों में मा अधिक अपराधी है।

हा यह मानन में काइ इन्कार नहीं करसकता कि बहुत
मन 'मरु' ने अमन तथा दूसर धर्मों का विरुद्ध करने की चेष्टा
का है। जैनधर्म यम धर्मों में से एक है जिनपर अगणित
असंख्य आश्रय हुए हैं। एक सत्र स बड़े आश्रय पर इस पाठ में
विचार करना है। वह नास्तिकता का आश्रय है। जब जैनों ने
धर्म का विरोध किया तो जनता का विश्वास वेदों से
उठ न लगा। इस से ग्रहणों में बड़ा लाभ मचा। अतः
उन्होंने एक पता युक्ति निकाली कि लाभ बढ़ापर अविश्वास
न करें। वह युक्ति यह है कि ना वद का नहीं मानते उन्हें
नास्तिक कहन लग। ईसाईय नास्तिक का आ असह्य अर्थ
(आ परमात्मा का न मान) या उसपर हरनाज पर करमनगन्त
लगा बनाया— 'नास्तिक' यद्निन्दक —अर्थात् वद को निन्दा
करने वाला नास्तिक है। तब मजकूर आश्रयक जैनों पर प्रायः
यह आशय किया जाता है कि वे नास्तिक हैं परन्तु यदि जनधर्म
का नास्तिक धर्म बढ़ा जायगा तो ससार का एक भी धर्म
नास्तिक न कहना सकगा।

धर्म का उद्देश्य साधक को साक्षात् करना है। अतएव अपना धर्म ही या दूसरों का उद्धार नहीं। प्राप्ति ही यहाँ मंजना चाहिये। याद रखना। सत्य मेरे सम्प्रदायों में बड़ा है। उसके लिए साधक ही या मने का छोड़ा जा सकता है। मने या सम्प्रदाय के लिए साधक का नहीं छोड़ा जा सकता।

[illegible]

कलियुगी भौम राममूर्ति

मुजफ्फरपुर शहर में एक दिन बड़ा उसाह था—यहाँ कचक नवाब साहब ने शंकर राममूर्ति से बाँची लगाई थी। नवाब साहब का माँटर राममूर्ति गार्डन ता उहाँ ५००) इनाम मिलेगा अन्यथा नवाब साहब उनसे १०००) जमान करेगा। छत के बहे ताबू में निज धान का अण्ड न थी नवाब साहब अपना माँटर के साथ उपस्थित थे। ठाँव समय पर ताबू के अन्दर का एक हाँगी

है यही नहीं ७१ मील की नज़ी से लौड़नी हु मांगर उनक गारार पर से पार हा जाती हैं । यह अलौकिक बल है दैवी शक्ति है । मुनकर आनंद हाता ह दायकर गता नभ उगला द्रवानी पडती है । किन्तु य धार्म दायन में असाध्य मायम पदन पर भी अस मय नहीं है । श्रवण करन पर लोग राममूर्ति नैसा बन सकत है । राममूर्ति रूय कहत है— निरुलता क्या है यह राममूर्ति न कभी न ई जाना । एक बार द्वा बार तीन बार पांच बार दस बार कागिण करन गग सकतता अय्य मिनगा कार्य वा माधयामि गार वा वातयामि —कमगा वा मग्गा यहा हमारा सिद्धान्त है ।

राममूर्ति में वा अलौकिक बल ज्ञान हम दखत है यह उनका लगानार कागिणों का करत है गार का दान नहीं है । बचपन में राममूर्ति बड रूयत पतन य । द्वा हा वर की उग्र में उनकी माना मर गयी थी । पांच वर का उग्र म हा उहें गमा (मास का गमा) हा गग था । उनका गहरा पाता और रागा म मायूम हाता था । अयनी हुबजता पर उहें बडा रूय था । माम, लम्माग हनुमान आदि का कयाए मुनकर उह माचा करत कि वहाँ में भी यसा यगरान हाता । मून में पदन लिखत समय भी यह यही सांचा करत य ।

कयत दज्जता म लग गहन म हा काम नहीं चजता । कर्म वोर पुण्य करना कलता का कायस्थ में बदजत और मसार म विउया हात है । वालक राममूर्ति न मा कसरत करनी रुक कर का । ज्ञान मून म मा यह पुण्यकर आदि राजन लग रुइ गिना नह विनाता लग म मा कसरत का पर रुइ लाभ न हुआ । हात कर गेगा दग में कसरत करन न । अवाह में इह बंडक करत और रुइता लडने लग । यह कहने है—

थाड़ा सा मात और रही। दिन में हा तीन सेर बादाम उनके पेट में जाता और कभी कभी एकधर सर मलाई में साना चादी का थक भा चोट जाने। दूध पसन्द नहीं था। मास मइली शराब आदि में तो सदा दूर रहने आया। इन कमन्य पस्तुओं के सदा त्यागी हा थ।

बज्र तो अनाधार हा मया। दहका चढ़ाव—उतार और सुन्दरता देखकर लोग सिद्धान्त किन्तु अर राममूर्ति का अपने बज्र का परासा दन के लिए दृष्टगोह शुरू हुई। मयाग की बात है कि उसी समय युजेन सेयडा नामक प्रसिद्ध यूरापीय पहलवान (जिसके डबेज का कसरने आप भारतवर्ष में भी प्रचलित हा रहा है) संसार में अपने बज्र का दका पाता और संसार के नामी नामी पहलवानों का पराडता हुआ हिंदुस्थान में पहुँचा। जब मद्रास आया राममूर्ति उसके बज्र को आच करने का आकुल हा गये। थ कहत है—

‘सेयडा के बज्र का पराडा किस प्रकार हा और मैं उसके आगे दिक् सकूंगा कि नहीं यह जानने का मैं उद्दिष्ट हा गया। अखिर मैं सेयडा के नौकर से दास्ता की। एक दिन उस नौकर का मैंने भाला चाप खिलादा और अब वह नग में उघने लगा मैं तम्बू में घुस गया और सेयडा के डम्बेस्त का आचमाया। मुझे तुरन्त विश्वास हा गया कि सेयडा केवल अपना धाजाओं से कर्ति लूट रहा है। वह बला है जरूर किन्तु जितना वह बनाता है, उतना नहीं। दूसरे हा दिन उस मैंने खेल दिया—कुत्ता लड़ने का ललकारा। किन्तु यह समझ गया कि मैं उससे थला हूँ इसलिए उसने यह कहकर अपना रणत मचायी कि मैं काल आदमी से कुत्ती नहा लड़ सकता। मुझे

किया। सैण्टा ने वाम उठाने में अधिक नामचीन पाया भी—यह पचास मन का बाँक उठा जाता था। राममूर्ति उसमें दुगुना तिगुना बोझ उठा लेता। अपने बल में लगभग सौ मन का हाथी बल्ले पर रख लेते थे यह बात तो मसार प्रसिद्ध है।

हिंदुस्थान में अपने बल का नका पत्रकर राममूर्ति विदेशों में भी गये। इंग्लैंड फ्रांस आदि यूरोपीय देशों में भी उनकी धारक बंध गयी। यहाँ नहीं उनकी धारता देखकर कितने विद्वान् अलने भी लगे। उन जागों में राममूर्ति को मार डालने की भी कोशिश की। मलाका द्वीप में इंदुश्वर जहर दिया गया। पहली धारता जहर का कोई लक्षण भी मानुष में हुआ। उनकी बलवान् जानका उसे माफ पचा गयी किन्तु दूसरी बार उन्हें इतना जहर दिया गया जिसमें बलवान् बाँका तक मर जा सकता था। जहर के लक्षण मानुष में ही राममूर्ति लगाए बाँधकर पाँच हजार दण्ड कर गये। पसीने के साथ बहुत कुछ जहर निकल गया तो भी बहुत दिनों तक वह छाट पर पड़े रहे। यों ही फ्रांस में भी कुछ मुष्ट ने जाल रचकर उन्हें मारने — किया। राममूर्ति छाती पर हाथी घड़ान के पदों

[illegible]

ही जिनका अगर है व अधिकोकाय कहलाने है।
उस बहुत बाल मरना के पछर । जिन ही जिनका
गरीर है व अलकाय कहलाने है । इसी प्रकार पाचा
के लक्षण समझना चाहिये ।

इन सब अंगों में गति का अन्ता कुछ विभिन्नता
नहीं है परन्तु कमाइय के कारण उनका गतियाँ
अपन हो रही हैं । अब अन्ता सब कर्मों से विजाग
हो जाता है तब उम्भ । सब गतियाँ व्यक्त हो उठती
हैं । उसी अवस्था का नास कहलाने है । व आरम्भ के
मकर और मर हुए ।

माहन—दूसरा द्रव कौनसा है ?

गुरु— जिसमें उपयुक्त गतियाँ नहीं पायी जानां वह जीव
नही अणु अणु है । मुख्य द्रव्य वहा दा है । इन में
म अणु के पांच भेद हैं— १। पुष्पज (२) घम (३)
अणु (४) अणु (५) काज ।

माहन—पुष्पज किसे कहलाने है ?

गुरु— जिसमें हमें ह सके जाय सके सृष्ट सके दस सके
वह पुष्पज द्रव है । दूसर शब्दोंमें जिसमें अणु अणु
और वल (म) गया और वह पुष्पज है ।

माहन— गुणों । अणु गुण दस सके है ता में पुष्पज हुआ ।
जिसमें विद्यापियों का अभि रहा है ता में पुष्पज हुआ ।
समाज के मना मनुष्य एक दूसर का दसन है ता वस
पुष्पज हुए किन्तु मनुष्यों में जानन और देखन का
शक्ति है इसलिए उन्हें ता और कहना चाहिये ।

गुरु— हा, एक मनुष्य दूसर का दसन है, वह साधारण

पहुँचाना है आ कही धूप में बड़ाहियों का सहायक दाता है। यदि धर्म ड्रव और अधर्म ड्रव प्रेरणापूर्वक चलाने और डहरान जगें ता विनयन स्थिति उत्पन्न हो जाय। क्योंकि जनों निव्य है 'पापक' है और किसी में कोई निबल नहा है। यमाहा ता धर्म ड्रव डहरान न हव और अधर्म ड्रव उत्पन्न न द।

चौथा ड्रव आकाश है। यह सब धन्तुआ का सब काम प्रगन करता है। यदि आकाश न हाना ता किसी का कहा स्थान न मिलता। इनक दो भद्र है—
(१) हाकाकाश और (२) अन्तःकाकाश। लाकाकाश आकाश के उभ भाग का कहन है जहाँ जीवादि पाच ड्रवों का मसा है और अन्तःकाकाश उभ कहन है जहाँ आकाश के अतिरिक्त और काड ड्रव नहीं पाया जाता। चौथरा अन्तरि कान है। काज उभ ड्रव का कहन है आ चौथादि पन्धों के परिचर्जन का कारण होता है। काज के सिवा अन्य ड्रवों के अंग अम्निकाय अण्ड लगाया जाता है यह 'यध' नहा है। अम-आवास्तिनाय पुग्गलाम्निकाय आदि।

समाप्त में जिनन पन्ध दम जान है, उन सबका इहाँ ६ ड्रवों में समाया है। इनके अतिरिक्त और काड ड्रव नहीं है।

रग्नि जग्यों के अर्थ।

दस्ता-अनुम। अण्ड-१२ । अकतन्त्र-विमला और अन्त

जावन न विग लानी जरा न तुदार काना,
हीना भई सुखि दुखि सबै वानऊनीसा।

रज घट्या ताथे गट्या चातक का चाव घट्या
और सब घट्या एक निम्ना दिन टूनीसा।।

अहा इन आयन अभाग न नाहि जाना
वातगग जानीमार दयारम माना है।

चावन क जार धिर जगम अन्तक जार,
जानि जे सताय कहु रम्ना न काना है ॥

नेई अण जावगम आय परलाक पास,
लग वर दण नुय भई ना नधाना है।

उाहा के मथ का नगसा जानि कावन है

याहा डेर नकरा न जाग नाथ लाना है ॥

जाका इट चाहे अमिट म उमटि जासा

चाव मुनि माहि जाय भा मत रहाय है।

पसा गरज म पाय विव विव खावग्याया

जमे कान साट भुइ मानक गमाय है ॥

माया मदा बुद्धि भाजा काया दन नय नृपा

आथा पन मोना अर कहा बनि भाव है।

तान विव सग्न नाने नाच नन विव डाल

कहा यदि पाव बुद्ध ददन नराये है ॥१॥

(सलगव मंत्र)।

देखहु जार चरा अन्का जमराच महोपति को अगवाना।

हरकच अन् निम्नान धरे, बहु गगन का सग कीज वलाना ॥

पाठ २४ वाँ

आत्मा की मिट्टि

यद्यपि बहुत लोग कहा करते हैं कि आत्मा कोई चीज नहीं है। किंतु विचार करने पर इसका अस्तिव ज्ञान पड़ता है। यह तो सभी अनुभव करने हों कि गरीब में मित्र भी कोई हमसे अलग है। आज कल के अनेक पश्चिमाय वैज्ञानिकों ने इतनी उपलब्धि की है कि ये विभिन्न क्षेत्र पुरातन के सहारे स्वतः जाय करने वाले यन्त्र बना लगे हैं पर ये यन्त्र भी केवल एक ही काम कर पाते हैं जिसके लिये वे बनाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उनमें साधन सम्पन्न परिस्थितियों पर विचार करके ऐसा कार्य करने की शक्ति नहीं होता। इसका कारण यह है। ऐसा समय आ सकता है जब बहुत बड़े यंत्राधिक और डाक्टर गरीबों का रोगनाश कर दें किंतु सब प्राणिमनुष्य का स्वतंत्र रूप से चेताने वाला जो निम्न प्राणप्रसाद है उसमें कोई जड़ वस्तु या कौन सा भीगन नहीं होता। जड़ के अभाव में जड़ पदार्थों का ही उपयोग नहीं हो सकता है। चेतन का नहीं। यही प्राण जिसमें पाव ज्ञान है वही चेतन आत्मा है।

जब पूछें कि यदि आत्मा जड़ पदार्थों के अभाव में पड़ा नहीं जाता तो फिर किस तरह उत्पन्न होता है?। उपर आत्मा का जो जन्म बनाया गया है उसी पर विचार करने से इसका उत्तर स्पष्ट हो जाता है और यह यह कि आत्मा उत्पन्न होता है नहीं। अतः यह सत्य होता है ज्ञान है कि आत्मा सदा सदा ही है और सदा रहता है। जब जन्म आ

उसका आधार है, अद्वैत ही जाता है नर यह दूसरा आधार
अध्यास दूसरा शतर धारण करता है । यमा नहीं है कि
गतिर क साथ आमा भा नष्ट हो जाता है । यह न कभी
मिगता है न यनती है । यह अनादि और अनन्त है । तथा
पृथिवी इत्यादि पञ्च भूता म यना हुई नहीं है ।

आमा क विषय में एक बार प्रदत्त गङ्गा न महाराज
केपी धर्मन म प्रनात्तर किया था ना पशुन मनारचक और
सिद्धिद है प्र नी राणा न कहा — महागङ्गा 'एक बार
का शत ह कि रमाग कालेन एक बार पब कर लाया ।
मने रम पन लादक कमर म हम विधा । हमरा हम दग का
या कि उमम द न कर नने पन रमा का भी प्रथम न हो सकता
भा । यकी दूर दान गया कि च रमाग हुआ पहा था । महागङ्गा
यदि गतिर थीर आमा भिय प्रशम हान ना आमा कहा
यनी जान ' यमक पादर निरुत्तर का कां माग न था । हमने
ना यमा शत शत ह कि दानो पब हा ह ।

गङ्गा का शत शत कर बना धर्मन महाराज शत— 'ग
उत्' मुझाग बना शक गने ह । उ पक रपा ह । उसकी गति
हिमा स नकता सकता । मिष्ट न हान पा मा अरि का रमन
और अगमन हो सकता ह । एक मान का विन्तुज बर कर
का एक मा छिड़ नर । विर यमक अदर गति बउगा
आप ना मुन यमका अदर मन सकता हा ना मने ' अदर
मनग उर मनेक नर गिा हा क शतर निरुत्तर सकता
है ना अमूर्ति का म विर उर क दप नने निरुत्तर सकता ?
अदर निरुत्तर सकता ह । अदर यह कि हा न हान म
आमा और शतर का सकता नही सिद्ध शक्ति ।

तो कारकी बात मान्य हासक्यों है अन्यथा मेरी यही बात ठीक है कि कामा और गरार एक है ।

क०ध०— नरन ' तुम्हारे अन्दर जानन की शक्ति है पर हारो काम सुधा दन मे यह दय जाता है । उसी प्रकार कामा मे अनल शक्ति है पर यह कर्म कपी होरो पन्न स न्हा हु है । मान ला समान बज पाजे हा सुषक है । एक क पास नई और मज्जत कायक है और दूसरे क पास पुराना और कमचार । क्या वे दोनों बराबर काम उग सबन है ?

प्र०— नहीं महामन्त्र '

क०ध०— बस । इसी प्रकार बाबाक वृद्ध और युवा दोनों की कामार्थ अनिरखने हुए भा बराबर मार नहीं पहुन कर सकते ।

प्र०— महामन्त्र । किसी समय हमारा कातवाज एक और पकड़ कर मर पास लाया । मैंने तजवार मे उस चार क टुकड़ टुकड़ करके उसमें कामा का बहुत खाजा पर वह कमी न दिखाया दो । नर फिर मैं कैसे उमे शतर स मिथ मानू ?

क०ध०— राजन । वह मैं पहन हा कह चुका हूँ कि कामा अमूर्तिक है और ज्ञा अमूर्तिक है उसे तुम कैसे देख सकते हा ? खरमक पथर मे अग्नि शमी है , अरदा का जकहा स भा अग्नि प्रपणित की जाती है, पूज मे सुगंध हाता है किन्तु खरमक अरदी की लकड़ों या पूज क टुकड़े करके ना तुम हममें

जानता था उसी समस्या में बिना ज्ञात क उनका आश्रित रहना
निरासत कसमभव था किन्तु प्रहति न पदा एक विचित्र कथामय
किया । पदा एक प्रकार क पद य आ नतयवक कृष्ण कह आत
य, इन्हीं में प्रचुर उल्ल मिलता था । और टापू क नियामिर्षा का
सारा काम इन्हीं में चमत्ता था । यात्रिणा में इतका कर्त्तव्य
झीर उनका हान भा हिले आता । इतम से एक अगस्त योडा
या सहम डेवमन न हम कर्त्तव्य कृष्ण क विषय में गतिर्लिता है-

वह वृक्ष आदि विभिन्न वृक्षों के समान भाग ४—५६
 पुत्र ऊँचा आदि डालियाँ बना देता है। इसका पत्तियों का
 ऊपरी पक्ष श्याम और माथी सफ़ेद होता है। इसमें न तो फूल
 समान हैं न फल। दिन का पत्तियाँ खुल कर वंश किरनों में
 झुलस जाता है पर रात को उनमें फलों का रस टपकने लगता
 है। हर रात के बादल का छाया उलट कर पर दूसरे काटकर
 जाता है और वह छाया फिर छा जाती है। अब देखते हैं
 कि पत्तियों के उलट के पास एक ही छद्म वृक्ष लगता है उस
 वृक्ष से पत्तों का रस निकल कर पसलाना पसलाने में
 होता है। बहुत ज़ाहद वृक्षों पर यह निश्चय किया गया है कि
 उलट वृक्ष से वृक्षों में वृक्षों का रस निकलता है वृक्षों
 निश्चय है।

यहूदा ट्यू मर में मित्रों से। इनमें निबला हुआ अन्न २५०
मील ऊपर से ट्यू बग़दद का नगराहा और लोगों की जाव
इकट्ठा का कर करना था। अब मसाला इस महिमा दिव
एतना समझते हैं—“अदि मेरे जाना जेलों इस रज

• एवम् १० मन्त्राश्च वर्तन्ते एवम् ।

रिपु—मगरन्' एक बात समझ में नहीं आई। जीव की निज वस्तु उसका पास ही है तो फिर कौन सी वस्तु प्राप्त करना शक्य रहा? उसे यह जीव मूल गया अथवा सो बैठा वह कैसे हो सकता है।

गुरु—धनस! यह जीव अनादि काज स राग द्वेष कषा होकर बनने चेतना धन का मूला हुआ है। जैसे एक अज्ञान्य निर्मल मधुर और शीतल उज से मरा हुआ है। पीछे उसपर का अथवा शैवाल हो गया। अब ता यह गुण बसे न रहे। एतज्जैसी अतज्जान रही निर्मलता नष्ट हो गया और मिटास दूर हो गया। यही हाल जीव का भी है उसका चेतनाधर्म सुखकार और राग द्वेष से ढक गया है। एक बात और समझ लेनी चाहिये कि शैवाल उज से ही उग्य होता है। इसी प्रकार राग द्वेष इत्यादि नाना प्रकार का बाधनप्रे जीव से ही पैदा होकर उसका चेतनाधर्म का दबा दतो और धरक कर जातो है। इन बातों में अन्तर यह है कि जीव से राग द्वेष इत्यादि का सम्मय अनादि काज से है किन्तु शैवाल और उज का सम्मय अनादि काज से नहीं है। इन बातों से समुप दृष्ट कर रिपु ने गुरुजी के चरणों में धनप्र मेव से प्रदान किया।



कविन इन्दो के अर्थ।

कविनेन्द्र। कविनेन्द्र नाम देव तत्त्व विद्वान् मया इदम् पुरुषं ज स्मर्ते। वैदिकान् पञ्च कुर्यात्तन्मया। एतन्मया मया त्तिष्ठेत्।

द्वीप के अंदर वहा के जंगलियों का हाल खाल जानने के लिए भेजा। कोलम्बस के साथी जब उस द्वीप के मोनरी भाग में पहुँचता वहा उन्होंने जंगल के बार्सियों के मुँह और नाक से धुँआ निकलने देखा। यह देखकर उनका बड़ा विस्मय हुआ। लौटकर उन्होंने अपने मरदार का हमकी सुचना दी और कहा कि जाने काते 'क्यूबा' निशसा नगे घूमने हैं और बड़े बड़े पत्थों का लपेटकर उनका एक सिरा जना दूसर का मुँह में रख डेलान की तरह धुँआ निकालत है।

ऐसा दिन से इस जैतानी और जंगली आदत का आरम्भ सम किया। कालक्रम उन पत्थों का कोई अज्ञात चीन समझकर अज्ञायकधर में रखन के लिए उन्हें यूरोप न गया। वहा कुछ धन मित्र तथा राजसभ स्पेन देश के अमारों ने उस जंगली आदत का मना लेना चाहा। बस फिर क्या था? जंगल ग दखादखा एक दूसर की मज्ज करने एक प्रथा चल गयी।

१४९४ ईस्वी में जब कालक्रम ने दूसरा बार अमेरिका की यात्रा की तो उसके साथियों ने वहा के आदिमियों का लबाटू सूपन देखा। हमका नचा भी यूरोप पहुँचा और अमारों के घर के स्त्रियों ने दिल्गा दिल्गा में सुपना का प्रयोग आरम्भ कर दिया। मेरा समाज में जब हाको का भंडो लग जानी तो लोग हसने हसने जाग पाग हो जात थे। घर घर दिल्गों की वह चीज साथ समाज का स्त्रियों का प्यारा आदत हो गया और लम्बाटू सुपना एक नया फैजल हो गया।

१५०३ ईस्वी में स्पेन राजा चारालुस नामक मान विजय करने गया था वहा के निवासियों ने बहुत बड़ी सख्या में उनका

दत्ता जाता है। यह सब रूप में आता है इस कृति का फल है।

क्या? यदि तुम में काह तम्बाकू पाना खाता सुघटा या खाना है तो हमारा नुमस प्रयत्न है कि अपनी बुद्धि में विचार कर कि हममें तुम्हें क्या काम है? तुम्हें मायूम हागा कि तुम अपना समय धन और स्वास्थ्य यथ मार रह हो। क्या अमरिका का एक जगहो जाति का इस गलित प्रथा का अन्त माना तुम्हें आभा दता है?

तम्बाकू एक बड़ा अहंराला पदार्थ है। आध मेर तम्बाकू में जितना अहंराला है उसका पूरा प्रभाव मनुष्य पर हो सक ता उसमें तीन सौ आत्मा मर सकत है। एक सिगारट के विष के प्रभाव में ११ आदमियों का मृत्यु हो सकता है। तम्बाकू का रस मनुष्य का हानि पहुँचाने वाला काहो के मांस के काम में आता है। अमरिका के कुछ लोगों में तम्बाकू का रस इस काम में लात है। यदि आप सिगार का मज कर पछा का चौड़ा करके अगले पट पर रस में और बंधू म पाय देता कुछ दर बाद हम के विष का प्रभाव आपका स्वय मन्दूम हो जायगा।

आ तम्बाकू इतना विषाल है उसका रस में नागम मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़गा बुद्धिमान पात्रक इसका स्वय ममम मकर है। अनुभव का दान है कि हममें अब किमा तम्बाकू या सिगारट धन धान के काम इसका मकर न करने वाल मनुष्य का बंदना पना है तो उसकी जान आपन में आ आती है। यही दगा उन लोगों का होती है जो पहन पहन तम्बाकू पाना सखने है। हम जान बन्ने अब अचानक उस कमे में खच आते है

मित्रता का हमका जगज्जगत्का का अविनाश का । हमका वही हम
मित्र का वही हमका वही हमका जगत् । हमका जगत् हमका जगत् ।

—२५५—

पाठ २८ वाँ

अन्यासिया

(४३९)

दारे को न बनिए है सोदा है इति हाट ।
सोमुल बना बहार है बहु दुकान का हाट ॥
बहु दुकान का हाट बाऊसावा बाऊ भूमी ।
आदा भाति विचार यन्तु है यदा अनडा ॥
यने दानदयाल साउधन पूया न प्याय ।
घर आरगा काम इन सब लूटन बार ॥

(किमान)

आदी भाति सुधारै मन किमान बिजाय ।
न तु पात पदनायगा समै गया अब साय ॥
मम गया अब साय नहीं फिर गता है है ।
है है हाकिम पात कहा लष ताकी है है ॥
यने दानदयाल साउधन पूया न प्याय ।
साउधन साउधन साउधन बिहगनिते बिधि आदीय

मात्र का बराबर मूलाक मिलना चाहिये । यह आवश्यक नहीं है कि मायापरा और मन्त्रों के भाजन के परिमाण में अधिक अन्तर हो । परन्तु मन्त्रों का ज्ञान है कि निबन्ध और बलवान के भाजन के परिमाण में अन्तर होना चाहिये । पुनः मन्त्रों के अन्तर मूल रूप वाला मन्त्र का मूलक में अन्तर होना है । एक लक्षण का यह कहना है कि यदि हम अपने भाजन का ज्ञान कुशल है कि मूल में हो उसका पुनः हम बराबर तार द्वारा वह मूल के साथ उनका ज्ञान हो हम पात्र में लेकर हम मन्त्रों का मूलक से ज्ञाना निरुद्ध कर सकते हैं । हमने मन्त्र द्वारा मन्त्रों के विषय में है । हमका पुनः का द्वारा मन्त्रों के विषय में है । हम उन्हीं मन्त्रों में है । यथा मन्त्रों में भाजन का परिमाण निश्चित कर मन्त्रों के अन्तर है ।

अधिक मायापरा न लिया है कि मन्त्रों का निश्चित मन्त्रों के मायापरा में अधिक ज्ञान है । यह एक ऐसा मायापरा बात है कि मायापरा के विना गीता मायापरा हम ज्ञाना में समझ सकते हैं । हम मन्त्रों के कर में पड़कर उसमें अधिक भाजन कर पाते हैं चितना उनका पात्रों में पचा सकते हैं । मायापरा का अन्तर मन्त्रों में है ।

भाजन के सम्बन्ध में दो बातें पर मन्त्रों के ज्ञान होना चाहिये । एक तो यह कि भाजन करने का साधन और मन्त्रों के अन्तर है । दूसरा यह कि मन्त्रों के मायापरा मायापरा है । अधिक नहीं । भाजन करने के समय मन्त्रों का मन्त्र ज्ञान का चरित्र है । यथा करने में हम पात्रों मन्त्रों में भी अधिक साधन भाग मन्त्रों के मन्त्रों और हमारा मन्त्रों के कर में पड़कर मन्त्रों । हमसे भाजन अन्तर पचना है पात्रों का साधन हो मन्त्रों के अन्तर

झाड़नी चाहिए। दूध में प्रतिदिन के साथ खान पीने के मामले में सबसे ज़रूरत की जाती है। ज्यादा से ज्यादा खानान की इच्छा उन लोगों में प्रायः दृष्टा जाता है। लोग यह नहीं साबित कि मात्रा अव्यवहार करने के लिए आवश्यक है। हमारे पर वही एक ध्यान देना चाहिए जहाँ तक वह हमारे स्वास्थ्य में बाधा न डाले। खाने के बाद कितना हा छंग पाचक औषध दूँदुन फिरते हैं। इस लगे पेट के नाता रोगों में फसकर ज़मे भर दुख उठाने हैं।

जिन लोगों का किमा कारण से अधिक मात्रा करने का अभ्यास पड़ गया है उन्हें धीरे धीरे अपना आदत का सुधारना चाहिए और महान में दो उपवास अवधि करना चाहिए। इसमें लाम हागा। बहुत हिंदू चौमास में एक हा समय मात्रा करने का धन जन है। इसमें मुख्यतः पावन वितान का रहस्य भरा हुआ है। जवबरसात में हाग में नमारा होता है और सुषुप्ति दिखायी देता है तो पेट का पाचन नर्ति दुर्ग पड़ जाता है। इस समय भोजन का मात्रा में कम कर देना चाहिए।

कितना बार खाना चाहिए इस विषय पर भी बहुत मत भेद है। भारत में अधिकांश मतुय हा बार खाने हैं। तान और बार बार खाने खाने आत्मों में पाव जाते हैं। गंगाबा के कारण एक दिन भी जिनका टोक तरह में कुछ नहीं मिलना हमें लागे की सम्प्रा में हम दिन में म करादो है। आजकल अमेरिका और इंग्लैंड में जसा समय स्थानित हा गया है जो लोग का कहलता है कि हा बार से अधिक नहीं खाना चाहिए। इन समाजों का सम्मति है कि हम सब कुछ नहीं खाना चाहिए। हमारा रात भर का नंद सुषुप्त को गरज पूरी कर देतो है। इसलिये सुषु

[illegible]

सावित्रीहोमार्हः । स ह्यमानवः । स नाम उच्यते । (यजुः ३०)
 यदा ज्ञाना मयि ते चित्तं पुनश्च मया कथयतां प्राणं कर लिया
 है । यामात्रं प्राणं उच्यते । यत् । ॥ यदा ज्ञानं कर मयि ।

कोडा महीना का उमका तुलना इतिहास में मिलता कहिये है। सबसे पहल रामचन्द्रजी का सग्न और अग्न सीताजी के पास और माताजी का शूद्रामणि रामचन्द्रजी के पास रह्यो है। पर बाद में हनुमानजी का धरना उनके प्रायश्चित्तनाम में पर पर प्रभुक्ति हुआ है। अब व राम का सदन लेकर सीताजी के पास गये और माता नारायण के मध्य में उन्हें सुरत लोच जान का कदा ना हनुमानजी मुमकिनकर बाल्य—माला। वासत्य के बाग्य हो तुम यमा कह रही हो। बिनाकविज्ञेता भी रामचन्द्रजी का नैतुन ह राम और उमका सारी मना मर सामने नगदर है। यदि धारा हो ना राम का मार उमका सेना का द्विध निश्चर कयन कयो पर बिगडर कयन रामचन्द्रजी के पास लयन। सता न उद्गकन्या ना ना जाने ररायक कयन का नय करक रातम यशियो की कयना पगडम दिखजा गिन जा मयना कयनयन गयन के पुत्री का यम घाम परचया। इस प्रकार रामचन्द्रजी का एक बहा चिन्ता हनुमानजी ने नुरा।

अब हनुमानजी माता का सदन लेकर रामचन्द्रजी के पास पहुच ना रामचन्द्रजी न रायन पर आवगन कर दिया। उस युद्ध में हनुमानजी न रामचन्द्रजी की बहा सहायता का था। राम ने उनके कार्यकीन न्यायिमिति और धरता से प्रमत्त होकर धनु का गन्ध ले दूर उनको गौरवधा बनाइ।

हनुमानजी न बहुत निजो तय रायन दिया। किमा समय रहे सुय का कयन शन दम समार में विरक्ति ना उग। उन्हेन माता—‘क्या’ इस समार में सब का उद्द के पछान् कयन हुआ है। सुय का रहन इसक लिए प्रयत्न प्रमाद है।

आदि । यदि धानरखनी होने के कारण हनुमानजी आदि बन्दर
हो जायें तो चिनका गाथा गात्र है व सब गाथा-साइहो जायें
चिनका नाहर गात्र है व सब नाहर-जर हा जायें यदा गात्री सय
षया-एक प्रहार की बिडिया-हा जायें और सियार गात्री सब
गुगाल हा जाय । चिनका गात्र कौनिक है, व सब कौनिक-उल्ह
हा जायें । अब यह कहना अनुचित है तो धानरखनी होने से
हनुमानजी जय पूज्य एणों का बन्दर कहना सबधा अनुचित है ।

प्यार बालिका' इन श्रान्तिपूज्य क्षमानुविक्त स्वस्यनाभों का उन्मूलन करना तुम्हारा कर्तव्य है ।



वर्जित लक्ष्यो व क्षय

[illegible]

मन्त्रमुनि

(३१ मन्त्रा सवेग)

जे समार-भाग-आग तन
 ठातन मुक्ति पथ की ओर ।
 आदा वेव करत मुख उरजत
 तिन ममान उत्तर नहि ओर ॥
 इन्द्रादि जक पद यदत
 आ अगम तीरथ गुचि ओर ।
 जामे मिल निवास गुन मइन
 सा धर्मसप नगन सिमोर ॥

॥३॥

इह मुनि काह बाय तर-तर वर
 उगम-उन सीवन चिनछेत ।
 शक्ति जग साखा गुन पल्लव
 मगज-गदुद मुक्त-पल देत ॥
 तब निहि काय-दधानज उरजत
 महामाह दल पवन समत ।
 सा मस्मान करत दिन अनर
 दाहत विरल सहित मुनि वत ॥

मन्त्रमुनि

(पन्ना ॥ ३॥)

कुम्हति निरुद हाय मडमाह मरहाय,
 जामे मुपल विरल जगै दिखेले ।

धर्मोपा दाना पुराण का पंचदश नाम और राजमार्ग में स्थिति
होकर बना— 'पृथ्वीनाथ' का नाम धनुषी प्रमुख है। यह एक न
नया कि कौन धनुष बिना धरती का हूँ हूँ समझाकर बनायी।
बागवत धारा— 'यहल प्रकाश की एक वस्त्र है। यह वही सत्यार्थ
मुख भागनी है परमानन्द का बाद इस नाम की अग्नि में अजला
जाया। अतएव यह वही है वही नहीं। दूसरा नाम है। इसे बना
अन्न मिलता है कभी नहीं। इसका अतिशय व महामा अग्नी
इन्द्रा न माना प्रकाश का लक्षण कहते हैं। साथ ही नामों का प्रकाश
नहीं करता और यह— 'इमान् अन्नं अन्नं अन्नं अन्नं अन्नं अन्नं
' इनके लिए बनाकर है। इसे एक नामों में मुख नहीं पर अन्तु के
बाद अन्तःमुख मुख मिलता। अतः यह वही नहीं पर वही है। नामों
एक वास्तविक सम्बन्ध है। यह निम्न नामों की गणितों में भिन्न
मात्रा विद्यमान है और निम्न नामों का नाम बनाकर नामों का उद्भव
है। इस नाम वही मुख है और न वही ही मिलता। इसलिए यह
यही वही नाम अगह नहीं है। चौथा यह धर्मोपा दाना पुराण
है। यह अन्तःमुख में दूसरा नाम मुख दूर नाम में कभी सकाश
नहीं करता तथा सबका धर्मोपा दान में लगे रहता है। इसका वही
भी मुख है और वही भा मुख मिलता अतएव यह वही वही
नाम अगह है। वही अन्तःमुख और अन्तःमुख है।

बादशाह पारबत की बुद्धिमत्ता से बड़ा असह्य हुआ और उसने यथास्थित आदर सम्मान करके सबका विज्ञा किया ।

बच्चा 'बनामा मुझ इसम स बिस भला क हाना चाहत हा'



बाल्य के पिता तथा पृथ्वी न पहचान उनका नई मूल शक्ति की थी—इस उम्र में, हार्नेण्ड तथा हनमार्क के कई प्रान्त ललित थे। और सब के सब प्रान्त दक्षिण उमड़ खड़ हुए और उन जीते हुए प्रान्तों की जीत लाने का चेष्टा शुरू कर दी। इतना ही नहीं सबने मिलकर एक साथ गुप्त-चुप स्थाइन के बाहरा क्षुण पर चढ़ाई कर दी। किन्तु हमने बाल्य जरा भी चिन्तित न हुआ। उसने राज समा में सरदारा के सामने भाषण करत हुए कहा—‘मैंने निश्चय कर लिया है कि कभी अन्याय में युद्ध नही प्रारम्भ करेगा किन्तु इस सब साथ ही अन्यायपूर्ण युद्ध का तब तक बंद भी न करेगा जब तक कि अन्याय प्रान्तों का पूर्ण रूप से नाश न कर दें।’ सबद पर के एक बालक राजा के मुँह में निश्चय हुए थे कि मेरे भाग्यपूर्ण गढ़ हैं। जहाँ गंगा पर बहने का उमन गर और नानु आदि जगता ज्ञानधरा के शिखर और राजमा जलमे शुरू कर दिया है। यह हम भाषण के दूसरे ही दिन में शिखर नाथ राज और सर्वोत्तम राज-वर्ग का गया। उसने साक्षात्-शिक्षण प्रदान या अन्य किसी कुशलता के मन्त्र जाना राजनीति नहीं है। इन कुशलता में पहचान अन्याय राजा अन्याय सर्वस्व में हाथ धाँव है। अन्याय मुक्त प्रान्त में ही चल जाना चाहिये। यह इनकी प्रगढ़ मेनासवाजन विज्ञानवाचा तथा अन्य मैत्रिक कार्यों में समस्त विज्ञान ज्ञान। बार-बार के समय के एक बह वादा और मेना पति आदि सहित वृत्तांतर सना में स्थित गया। किन्तु यह हम तरह क्षुणों के पाठ पढ़ा कि एक एक करके सबमें बरजा दिया। हनमार्क की सेना का बार बार खट्टा और उड़-मेना ऊँच हनमार्क का मृमि पर ना उतरा। उस समय वह बहला लाने तथा युद्ध करने के लिए हनता बेचने हो रहा था कि महाम से उतरने

— **1998** — **1999** — **2000** — **2001** — **2002** — **2003** — **2004** — **2005** — **2006** — **2007** — **2008** — **2009** — **2010** — **2011** — **2012** — **2013** — **2014** — **2015** — **2016** — **2017** — **2018** — **2019** — **2020** — **2021** — **2022** — **2023** — **2024** — **2025** — **2026** — **2027** — **2028** — **2029** — **2030** — **2031** — **2032** — **2033** — **2034** — **2035** — **2036** — **2037** — **2038** — **2039** — **2040** — **2041** — **2042** — **2043** — **2044** — **2045** — **2046** — **2047** — **2048** — **2049** — **2050** — **2051** — **2052** — **2053** — **2054** — **2055** — **2056** — **2057** — **2058** — **2059** — **2060** — **2061** — **2062** — **2063** — **2064** — **2065** — **2066** — **2067** — **2068** — **2069** — **2070** — **2071** — **2072** — **2073** — **2074** — **2075** — **2076** — **2077** — **2078** — **2079** — **2080** — **2081** — **2082** — **2083** — **2084** — **2085** — **2086** — **2087** — **2088** — **2089** — **2090** — **2091** — **2092** — **2093** — **2094** — **2095** — **2096** — **2097** — **2098** — **2099** — **2100** — **2101** — **2102** — **2103** — **2104** — **2105** — **2106** — **2107** — **2108** — **2109** — **2110** — **2111** — **2112** — **2113** — **2114** — **2115** — **2116** — **2117** — **2118** — **2119** — **2120** — **2121** — **2122** — **2123** — **2124** — **2125** — **2126** — **2127** — **2128** — **2129** — **2130** — **2131** — **2132** — **2133** — **2134** — **2135** — **2136** — **2137** — **2138** — **2139** — **2140** — **2141** — **2142** — **2143** — **2144** — **2145** — **2146** — **2147** — **2148** — **2149** — **2150** — **2151** — **2152** — **2153** — **2154** — **2155** — **2156** — **2157** — **2158** — **2159** — **2160** — **2161** — **2162** — **2163** — **2164** — **2165** — **2166** — **2167** — **2168** — **2169** — **2170** — **2171** — **2172** — **2173** — **2174** — **2175** — **2176** — **2177** — **2178** — **2179** — **2180** — **2181** — **2182** — **2183** — **2184** — **2185** — **2186** — **2187** — **2188** — **2189** — **2190** — **2191** — **2192** — **2193** — **2194** — **2195** — **2196** — **2197** — **2198** — **2199** — **2200** — **2201** — **2202** — **2203** — **2204** — **2205** — **2206** — **2207** — **2208** — **2209** — **2210** — **2211** — **2212** — **2213** — **2214** — **2215** — **2216** — **2217** — **2218** — **2219** — **2220** — **2221** — **2222** — **2223** — **2224** — **2225** — **2226** — **2227** — **2228** — **2229** — **2230** — **2231** — **2232** — **2233** — **2234** — **2235** — **2236** — **2237** — **2238** — **2239** — **2240** — **2241** — **2242** — **2243** — **2244** — **2245** — **2246** — **2247** — **2248** — **2249** — **2250** — **2251** — **2252** — **2253** — **2254** — **2255** — **2256** — **2257** — **2258** — **2259** — **2260** — **2261** — **2262** — **2263** — **2264** — **2265** — **2266** — **2267** — **2268** — **2269** — **2270** — **2271** — **2272** — **2273** — **2274** — **2275** — **2276** — **2277** — **2278** — **2279** — **2280** — **2281** — **2282** — **2283** — **2284** — **2285** — **2286** — **2287** — **2288** — **2289** — **2290** — **2291** — **2292** — **2293** — **2294** — **2295** — **2296** — **2297** — **2298** — **2299** — **2300** — **2301** — **2302** — **2303** — **2304** — **2305** — **2306** — **2307** — **2308** — **2309** — **2310** — **2311** — **2312** — **2313** — **2314** — **2315** — **2316** — **2317** — **2318** — **2319** — **2320** — **2321** — **2322** — **2323** — **2324** — **2325** — **2326** — **2327** — **2328** — **2329** — **2330** — **2331** — **2332** — **2333** — **2334** — **2335** — **2336** — **2337** — **2338** — **2339** — **2340** — **2341** — **2342** — **2343** — **2344** — **2345** — **2346** — **2347** — **2348** — **2349** — **2350** — **2351** — **2352** — **2353** — **2354** — **2355** — **2356** — **2357** — **2358** — **2359** — **2360** — **2361** — **2362** — **2363** — **2364** — **2365** — **2366** — **2367** — **2368** — **2369** — <

191

जिय पूरय ता न विचार कर
 अति आनुर है बहुत पाप उपाध ।
 निन आनंद-बंद जिनस्तन
 पदपञ्च सो नहिं नह लगायै ॥
 जब ताम उर दुख आन पर
 तब मुन ब्रूया जग म विज्जहारै ।
 अब पाप अनाप दुभासन काशन,
 आग लग पर कूर हरायै ॥

गम धर्म मन्त्रहार धन गम धर्म धार,
 जैन विघ्ननिघ्नकार धीमन सुधारक ।
 शौन्य पुनार माहि भाज्य उवार ॥
 उदारकोविदार कल्पकृष्ण-रूपकारक ॥

कठिन नन्दो क कथ

विष्णु धर्म कथा कथा । धर्म कथा ॥ १ (२५) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ २ (२६) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ३ (२७) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ४ (२८) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ५ (२९) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ६ (३०) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ७ (३१) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ८ (३२) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ ९ (३३) ॥
 धर्म कथा कथा कथा । धर्म कथा ॥ १० (३४) ॥

पाठ ३७ वाँ

अमृत-शायी

(१)

सत्यन पुरष का उचित है कि उसे वह जिसी साधु पुरष के
 स मन रश्मि धवन ॥ जना हा वस ॥ १ ॥ पुरष क साधन मा हाय
 जग करवाने—पुरष का ता धन्य है मठा मठा बाटो से
 सन्तुष्ट करके हूँ ॥ ३ ॥ मनुष्य के सन्तुष्ट और प्रियता की

पाठ ३८ वाँ

स्पाटाद

१२०— 'गति आ गति' का अनुप या बड़ा हाथर गया
है बहुत ऊँचा है ।

गति— यह गति बड़ का घुस दिखकर) इस वृत्त में भी
ऊँचा है ।

१२१— 'स्पाटाद' वही वही ऊँचा काँसा गुना भा है 'नाह'
का कन्द मनुष्या में डेढ़ा था किन्तु इस वृत्त में तो
बाँधा ही था ।

गति— तुम यह विविध मनुष्य इन नदों का उदाहरण देकर
जाने दो जो वहाँ नाहका नदों का उदाहरण देकर
बुद्धि का नाह' मजा उभरता है तो बड़ा क्या
बतलाना है । यह यदि बड़ा है तो बहुत लंबा बड़ी
बहन है । वह ही पस्तु में दिखने पर नही पाए जा
सकते ।

१२२— 'नाह' वहाँ का उभरता नाहका उदाहरण उदाहरण
नाहिका नाहिका है । विविध नदों का उदाहरण देकर
वहाँ उभरता नाहका है । बड़ का उदाहरण उदाहरण और
हमारा उदाहरण उदाहरण वहाँ का विविध बने है
सकता है । उदाहरण उदाहरण उदाहरण उदाहरण उदाहरण
वहाँ ।

१२३— 'नाह' वहाँ है ।

२२०— तुम्हारे विश्वास समार में एक भी सिद्धान्त एक भा सम्प्रदाय और एक भी दर सच्चा न होना चाहिये । क्योंकि किसी भी सिद्धान्त या सम्प्रदाय का सब लोग स्वीकार नहीं करते हैं । किसी सिद्धान्त की सत्यता सब या अधिकांश लोगों का मानना से नहीं होती । वह अपने-विशेष निष्कर्षों से ही बनता है । लोग जान या जानिये की वृत्ति से या अपनी प्रतिष्ठा के लिए सब सिद्धान्त को न मानकर निष्पक्ष सम्प्रदाय स्वीकार करते हैं । यह सच है कि किसी सम्प्रदाय न स्वीकार का असत्य बतलाया है परन्तु निष्पक्ष सिद्धान्तों में उनकी इस वृत्ति को स्वीकार ही समझा है ।

शान्ति— अच्छा य बातें जानो । तुम कहते हो स्वीकार से बच दिनाय का विनाश होता है । सो कैसे ?

२२०— सुना । किसी जगह धाड़ में अंधे बड़े थे । माग्य सब वहाँ एक हाथ का निहना । सब के सब हाथों के निबट पड़ते । किसी ने सूँघ पकड़ा तो किसी ने बाँध । किसी ने जाल पकड़ा तो किसी ने खाँसे, किसी ने पूँछ पकड़ा तो किसी ने पीठ । सबने समझा हमने हाथ पकड़ दिया है । सब अपने-अपने काम का सच्चा समझ साधुए हो गये । काना-ऊँ में हाथों का चर्चा दिखी । जिसने पूँछ पकड़ा था वह बाड़ा-हाथ रक्सा सरेखा होता है । सूँघ पकड़ने वाला दुखे-अधो रहता । बाँध काट कर दबा—मूँड विच्छिन्न मूँड । हाथों रक्सा खरीखा नहीं होकर वह तो उन सपना होता है । बँडार बँडार—बाँधे कर गये देखें हो क्या



पाठ '४२ वाँ

आदर्श रम्यनि

प्रातः काल का समय था। नियमित अभ्यास का अनुसार गुरुदेव का व्याख्यान का समय हो रहा था। धावक और धावि कार्मा के समूह के समूह उपाध्य का भार बढ़ उल्लेखनीय था। सुकरी दृष्टि में यह भाग में गढ़ा हुआ था ताकि इसलिये कि परा धाव से किसी आग्रह से तुला तिसा से था। क गढ़ में नगिरपक। भूतों का जोर नुक रूप में क मरने के समान मान्य होत था जैसे बुद्धि के साथ में हो भेक गया है। यगज में मनाहरी महल मेंना सिर ऊंचा किए लक था। कि तु इनमें से कोई उनका भार माछ उठाकर भी न गवता था जिसमें साथ प्रहर होना था कि इनकी दृष्टि में गुरुभक्ति जोर धर्म के सामने इन महली का हुद भी महत्व नहीं है। जो नाग उपाध्य में गुरुचरन के गुरु महाराज की विधिदुष्कर व तगा नमस्कार काक उनका सुख साता पुष्कर शिष्टाचार का पालन कर नियत स्थान पर उठते जाते थे।

व्याख्यान का समय हो चुका। गुरु महाराज ने अपने मुख केन्द्र से उपदेश-वाचन को करा करता प्रारम्भ किया। धोता जल बकुधाव से उसे पान करने लग। उनके चरित्र प्रसन्न थे माना उप देशमूर्त का पान करके धनमगमर होत में उनके सब मनोरथ पूरे हो गये हैं। महाराज ने ध्यान प्रत्यर्थ की महिमा बताई। वे कहने लगे-भद्रजारा प्रत्यक्ष मानवतावन का गान्धिका मधम सापान है। जिसने इस वासना को जता उसे उप चार इन्द्रिया को जालना, यहूत सुगम है। धन पालन पड़न इस वासना का

पुष्टि पत्र बढ़ता जाता है। किसी वृत्ति को काबू में करने के लिए धार २ प्रदान करना चाहिये।

‘गुरुता’ मानना करना यथाय है। संयम तन और मन को उन्नत बनाकर आध्यात्मिक जीवन का साक्षात्कार कराता है। मैं इस प्रकार का जीवन व्यतात करने के लिए प्रचार हा रही हूँ क्या इसमें आप सहायता न करेंगे ?”

‘अच्छा मेरा कहना मानागी’ ।

‘आ हा’ कहकर बालिका महाराज की ओर उत्कण्ठा से देखने लगी। ‘बालिका’ तू इतना प्रतिज्ञा कर कि— ‘दृष्टव्य’ में मन गचन और काय से जीवन पर्यन्त गुह्य द्रष्टव्य पार्युगा।

“गुह्यता’ गङ्गा रक्षाकार है।” कहकर बालिका सुशी-सुशी बतलायी।

बालिका का नाम विजया था। उसका पिता का नाम धना-वद था। धनावद कच्छदेश के नामी सठ था।

+ + + + +

उसी गङ्गा में वह प्रहसित सठ रहते थे। उनके लड़क का नाम विजयकुमार था। विजयकुमार बहुत प्रतापी था। उसने भी वह दिन गुह्य महाराज के धामुख से द्रष्टव्य का महसूस हुआ। गुह्यता में द्रष्टव्य पालन करने की प्रतिज्ञा की।

जिस दिन विजयकुमार प्रतिज्ञा लेकर घर लौटा उसी दिन का तात्पर्य न उसका सगाई का पत्रा दृष्ट। व. बाल—“विजय’ काउ रखा बपर में रहने वाला धनावद धेहा के पत्रा से सगाई को साठ कहा गया है। गुह्यता क्या है ?”

